चन्दामामा
दिसम्बर १९७३
90
P

Photo by: **C. K. SATYARAJ**

राम और श्याम खजाने की खोज में!
मिल गया, मिल गया... खजाने का नक्शा मिल गया!
चलो जल्दी नाव चलायें, दरिया की लहरों में जायें!
कई दिन बाद आया तूफान... नाव को किया बहुत हैरान!
नाव डूबी गोता खाकर... दोनों पहुंचे किनारे जाकर!
चलते चलते उन्होंने देखी... छोटी झोपड़ी एक अनोखी!
बच्चों ने नाना को जगाया... खजाने का नक्शा दिखलाया!
बच्चों मालामाल हो जाओ... पॉपिन्स खाओ, मौज उड़ाओ!
रसीली प्यारी मजेदार
पारले
पॉपिन्स
फलों के स्वादवाली गोलियां
PARLE POPPINS
५ फलों के स्वाद— रास्पबेरी, अनानास, नींबू, नारंगी व मोसंबी..
हर पॅकेट में १३ गोलियां
everest/507/PP Hin

तुमको केवल चिक्लेट्स जोकर तक पहुंचने का सबसे छोटा रास्ता ढूंढ निकालना है. कितना आसान है यह! तो बस, शुरू कर दो अब. दिये गये चित्र में इस रास्ते को चिह्नित करके दिखलाओ.

जोकर तक पहुंचने का रास्ता ढूंढ लेने के बाद नीचे के वाक्य को अधिक से अधिक ९ शब्दों के द्वारा अंग्रेजी में ही पूरा करो. अपने प्रवेशपत्रों को Post Box 9116, Bombay-25 के पते पर भेजो. लिफाफे पर "Chiclets Contest" लिखा रहना चाहिए.

I like Chiclets best because..

....

Name..

....Age.................

Address...

....

Dealers' name and address...

....

जल्दी करो! प्रतियोगिता के प्रति बच्चों का असीम उत्साह देख कर अंतिम तिथि दिसंबर ३१, १९७३ तक बढ़ा दी गई है.

प्रतियोगिता के नियम

१. कार्बर-हिन्दुस्तान लिमिटेड और उनकी विज्ञापन संस्थाओं में काम करनेवालों के बच्चों को छोड़कर कोई भी बच्चा इस प्रतियोगिता में भाग ले सकता है.

२. प्रतियोगी चाहे जितने भी प्रवेशपत्र भेज सकते हैं, किंतु प्रत्येक प्रवेशपत्र के साथ १२ चिक्लेट्सवाले पैक के ६ खाली डिब्बों या २ चिक्लेट्सवाले पैक के २० खाली डिब्बों का होना जरूरी है.

३. प्रवेशपत्र अंग्रेजी में ही भरे जाने चाहिए.

४. अस्पष्ट भरे गए प्रवेशपत्र या कम टिकट लगे अथवा बिना टिकट लगे प्रवेशपत्र रद्द कर दिये जाएंगे.

५. प्रतियोगिता संबन्धी निर्णय निष्पक्ष निर्णायकों की एक मंडली करेगी. इसका निर्णय अंतिम और मान्य होगा.

६. इस संबन्ध में किसी प्रकार का पत्रव्यवहार नहीं किया जाएगा.

विजेताओं के नाम
इस पत्रिका के अप्रैल माह के अंक में
प्रकाशित किये जाएँगे

प्रत्येक प्रतियोगी को एक चिक्लेट्स फ़न एल्बम मुफ़्त मिलेगा.

डोनल्ड डक के साथ साथ बढ़ने में बड़ा मजा है !

सहज और सक्रिय रूप में बचत की आदत डालने में अपने बच्चों की मदद कीजिये। चार्टर्ड बैंक के किसी भी शाखा में चले आइये और 'डिस्नी कैरेक्टर खाते' में सिर्फ ५/- रु० से एक खाता खोल दीजिये। 'डिस्नी कैरेक्टर खाते' के साथ हर बच्चे को मुफ्त में दिये गये 'डोनल्ड डक मनी बॉक्स' में बचत के रुपये बढ़ते देख उसे बड़ा मज़ा आयेगा।

दि चार्टर्ड बैंक

—जहाँ सेवा को महत्वपूर्ण माना जाता है

भारत में शाखाएँ : अमृतसर, बम्बई, कलकत्ता, कैलिकट, कोचिन, दिल्ली, कानपुर, मद्रास, नई दिल्ली एवं वास्को डि गामा

© WALT DISNEY PRODUCTIONS

अरी दीदी! जेम्स से बहुत खेल लिये...
अब खा लें!
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
GEMS
जी हाँ—जेम्स का जादू ही कुछ ऐसा है!
मिल्क चॉकलेट जेम्स है कुरकुरा और मज़ेदार,
मधुर रंगों की बौछार!
नाचो-गाओ, धूम मचाओ, कॅडबरीज़ जेम्स से मज़ा उड़ाओ!
AIYARS-C. 285 HN

चन्दामामा
संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'
इस महीने की बेताल कथा 'बचन भंग' में यह बताया गया है कि प्रत्येक पद पर योग्य व्यक्ति को ही नियुक्त करना चाहिए। उसके अन्य गुणों से कोई मतलब नहीं होता। इस कहानी में राजा ने अपने उत्तराधिकारी के चुनाव में ऐसे व्यक्ति को पसंद किया, जो उसके प्रति बिलकुल लापरवाह था हालांकि राजा ने इसके पूर्व किये गये सभी वचन भंग किये। फिर भी राजा ने पक्षपात दिखाया होता तो अयोग्य व्यक्ति राजा बन जाता।
वर्ष : २६ दिसम्बर १९७३ अंक : ६
CP
CHITRA

धन्यास्ते पुरुषश्रेष्ठा ये बुद्ध्या कोप मुत्थितम्
निरुंधंति महात्मानो दीप्त मग्नि मिवाम्भसा । ॥ १ ॥

[क्रोध आने पर लपटों को जल से बुझाने जैसे उस पर जो नियंत्रण रखते हैं, वे ही पुरुष श्रेष्ठ महात्मा हैं ।]

क्रुद्धः पापम् न कुर्यात् कः क्रुद्धोहन्यात् गुरुनपि
क्रुद्धः परुषया वाचा नरस्साधू नधिक्षिपेत् । ॥ २ ॥

[क्रोध में आनेवाला व्यक्ति कौन पाप किये बिना रहता है? ऐसा व्यक्ति गुरु का भी वध करता है । क्रोधी व्यक्ति कठिन वाक्यों के द्वारा सज्जनों का भी तिरस्कार करता है ।]

वाच्यावाच्यम् प्रकुपितो न विजानाति कर्हिचित्
ना कार्य मस्ति क्रुद्धस्य, ना वाच्यम् विद्यते क्वचित् । ॥ ३ ॥

[जो क्रोध में आता है, वह यह नहीं देखता कि कौन-सी बात कहनी है और कौन बात नहीं कहनी है । वह यह भी नहीं जानता कि उसे कौन-सा काम नहीं करना है और कौन बात नहीं कहनी है ।]

य स्समुत्पतितम् क्रोधम् क्षमयैव निरस्यति
य थोरगस्त्वचम् जीर्णाम् स वै पुरुष उच्यते । ॥ ४ ॥

[सांप जैसे अपने शिथिल चर्म याने केंचुली को जैसे त्याग देता है, वैसे ही अपने क्रोध को सहनशीलता के साथ जो त्याग देता है, वही सच्चा पुरुष है ।]

क्रोध

यक्ष पर्वत

[१८]

[वीरपुर के सैनिकों को हराकर समरबाहू के अनुचर जंगली लोगों की मदद से पिंजड़ों में फँसे सिंह और बाघों को लेकर स्वर्णाचारी के पास पहुँचे। समरबाहू के अनुचरों से बचकर वीरपुर के चिड़ियाघर का अधिकारी और एक सैनिक अपने घोड़ों पर वीरपुर नगर पहुँचे। बाद—]

वीरपुर राजा के चिड़ियाघर का अधिकारी तथा एक सैनिक घोड़ों को राजपथ पर दौड़ाते सब को चेतावनी देते हुए जो शोरगुल मचा रहे थे, उसे राजा वीरसिंह तथा उसके मंत्री ने सुना। उस वक़्त वे दोनों राजमहल पर टहलते राजनीति की चर्चा कर रहे थे।

राजा वीरसिंह ने पहले महल पर से नीचे राजपथ की ओर दृष्टि दौड़ायी, आश्चर्य में आकर मंत्री को बुलाकर कहा— "महामंत्री, यह क्या? हमारे चिड़ियाघर का अधिकारी एक सैनिक को साथ ले इस तरह चिल्लाते भागता जा रहा है, मानों सिंह और बाघ उनका पीछा कर रहे हो! या दुश्मन उन पर चढ़ आया हो!"

राजा के मुंह से ये बातें सुन मंत्री ने भी नीचे की ओर झांककर देखा। उसे

चिड़िया घर के अधिकारी के साथ जनता भी चिल्लाते रास्ते पर भागते दिखायी दी। उसने दुर्ग के द्वार पर पहरा देनेवाले सिपाही को बुलाकर असली बात जान लेनी चाही, तभी चिड़ियाघर का अधिकारी और सैनिक द्वार के पास आ पहुँचे। पहरेदार ने उन दोनों को रोका और घोड़ों से उतर कर भीतर जाने को सुझाया।

चिड़ियाघर का अधिकारी उसके सुझाव का तिरस्कार करते उच्च स्वर में बोला— "यह तुम क्या कहते हो? एक ओर हमारा देश खतरे में फँसा है और दूसरी ओर तुम इन औपचारिक बातों से समय बरबाद करना चाहते हो?"

"देश के लिए खतरा है! राज्य के लिए मुसीबत है! दुश्मन चढ़ा आ रहा है..." यों चिल्लाते सैनिक तेजी के साथ घोड़े को दर्वाजा पार कराने को हुआ, तब पहरेदार ने भाले की मूठ से सैनिक की बगल में घुसेड़ दिया। सैनिक घोड़े पर से औंधे मुँह नीचे गिरते चिल्ला उठा— "महाराजा वीरसिंह की जय!"

महल पर से इस दृश्य को देख राजा वीरसिंह बड़ा खुश हुआ और मंत्री से बोला—"देखते हो न हमारे सैनिकों की राज भक्ति! ऐसे सैनिकों की सहायता से हम कई राज्य जीत सकते हैं। मगर हम ऐसे क्षत्रिय धर्मों का पालन किये बिना अपने सैनिकों की राज भक्ति को वृथा बना रहे हैं!"

राजा की ये बातें मंत्री को अनुचित मालूम हुई। चिड़िया घर का मालिक तथा सैनिक ने जो बातें पहरेदार से कहीं, उन्हें मंत्री ने सुन ली थीं। उसे लगा कि ये दोनों यह सोचकर जल्दबाजी में राजमहल तक आये होंगे कि राज्य के लिए कोई खतरा पैदा होनेवाला है।

मंत्री ने हाथ उठाकर पहरेदार को पुकारा और कहा—"सुनो, उन्हें घोड़ों के साथ या बिना घोड़ों के ही सही शीघ्र अंदर भेज दो।"

मंत्री का आदेश सुनते ही पहरेदार ने चिड़ियाघर के अधिकारी को भीतर जाने दिया और घोड़े से गिरे सैनिक का हाथ पकड़कर खड़ा कर दिया। इसके बाद आगे-आगे चिड़ियाघर का अधिकारी घोड़े पर तथा पीछे सैनिक लंगड़ाते महल के प्राँगण में पहुँचे। मंत्री ने एक सेवक को बुलाकर उन्हें अपने पास लिवा लाने का आदेश दिया।

चिड़ियाघर का अधिकारी तथा सैनिक राजमहल की छत पर आये, राजा तथा मंत्री को देख प्रणाम करके थोड़ी दूर पर हाथ बाँधे खड़े हो गये। तब मंत्री ने कठोर स्वर में पूछा—"तुम दोनों भी पुराने राजकर्मचारी हो? क्या यह बात नहीं जानते कि राजमहल के प्राँगण में घोड़ों पर सवार हो प्रवेश नहीं कर सकते!"

यह धमकी सुनकर काँपते हुए चिड़िया घर का अधिकारी बोला—"महामंत्री, हमें क्षमा करें! राज्य पर खतरे के बादलों को मँडराते देख उस आवेश में हम यह बात बिलकुल भूल गये हैं। हमारी यह गुस्ताख़ी मुआफ़ हो!"

इस उत्तर ने राजा वीरसिंह को आश्चर्य चकित बनाया। क्या वीरपुर का राज्य खतरे में फँस गया है? कैसे? किसके द्वारा? ये प्रश्न राजा चिड़ियाघर के अधिकारी से पूछने ही जा रहा था, तब मंत्री ने भौंहें चढ़ाकर पूछा—"क्या कहा, राज्य के लिए खतरा? कौन हमला करने

जा रहा है? हमारी सारी सेनाएँ राज्य की सीमाओं पर चौकन्ने हो पहरा दे रही हैं न? अगर दुश्मन हमला करता तो पहले यह खबर हमारे सेनापति को मिल जाती? खूंख्वार जानवरों को पकड़ कर उन्हें पालते नगर में आराम की जिंदगी बिताने वाले तुमको दुश्मन के द्वारा हमला करने की बात पहले कैसे मालूम होगी? जल्दी हमें साफ़ साफ़ पूरा विवरण बतला दो।"

अजायबघर का अधिकारी एक बार और मंत्री को प्रणाम करके कांपते स्वर में बोला—"महा मंत्रीजी, हमें एक बार और क्षमा कर दीजिए! मैं चिड़िया घर के वास्ते जानवर और पक्षियों को पकड़ लाने के ख्याल से कुछ सैनिकों को साथ ले हमारे राज्य की उत्तरी सीमा में स्थित जंगलों में चला गया। वहाँ पर समरबाहु नामक एक राजा के सैनिक हमारी तरफ़ ऊँटों पर आये और ह. पर हमला कर बैठे। हमने हिम्मत के साथ उनका सामना किया और कई लोगों को तलवार के घाट उतारा। लेकिन इस बीच ऊँटों का एक और दल अचानक हम पर चढ़ाई कर बैठा। हमने बड़ी बहादूरी के साथ उनका सामना किया, पर इस लड़ाई में हमारे सैनिकों में से कुछ लोग घायल हो गये। कुछ सैनिकों की तलवारें शत्रु को काट-काटकर अपनी धार खो बैठीं। फिर भी राजभक्ति तथा देशभक्ति से प्रेरित हो हमने कुछ और दुश्मन के सैनिकों का वध किया, इस प्रकार दुश्मन का वध करते हमारे कुछ सैनिक वीर स्वर्ग को प्राप्त हुए। मैं तथा यह सैनिक हम दोनों दुश्मन के घेरे को तोड़कर यह समाचार देने आपके पास चले आये हैं।"

चिड़ियाघर के अधिकारी के मुंह से ये सारी बातें एक सांस में सुनकर राजा तथा मंत्री भी यह सोचकर डर गये कि जंगल में कोई जबर्दस्त दुश्मन घुस आया है और कोई मौका देख राजधानी पर हमला बोल देनेवाला है।

इसके बाद राजा वीरसिंह ने दो-तीन पल तक सर झुकाकर सोचा और अपने मंत्री से कहा—"महा मंत्री, हमारे चिड़ियाघर के अधिकारी के कथनानुसार लगता है कि हमारे राज्य की उत्तरी सीमा पर कोई ज़बर्दस्त दुश्मन आ पहुँचा है। हमें शीघ्र इसकी तहक़ीकात करनी है। हमारे सेनापति को तुरंत बुलवा लो।"

मंत्री ने सेनापति को बुला लाने के लिए एक नौकर को भेजा, तब चिड़ियाघर के अधिकारी तथा सैनिक की ओर तीव्र दृष्टि से देखते हुए कहा—"तुम्हारा काम तो जानवरों को पकड़ कर पालतू बनाना है न? पर तुम्हारी बातों से लगता है कि तुमने जंगल में एक कुशल खड्ग योद्धा की तरह लड़ाई की है। क्या तुम लोग युद्ध के लिए तैयार होकर गये थे?"

"महा मंत्रीजी, आप कृपया सुनने का कष्ट करें। मुझे अपने पेशे में कभी कभी जंगल में सिंहों तथा बाघों के साथ मुष्ठि-युद्ध करना पड़ता है। ऐसे खूँख्वार जानवरों के साथ खेलने वाले मुझे दुश्मन के साथ खड्ग युद्ध करना कोई बड़ी बात नहीं। जब आफ़त आ जाती है, तब देश और अपने प्राणों की रक्षा के लिए युद्ध करना ही पड़ता है। सो हमने भी जान लड़ाकर युद्ध किया।" चिड़ियाघर के अधिकारी ने कहा।

चिड़ियाघर के अधिकारी की बातों पर मंत्री का विश्वास न जमा। उसने चिड़ियाघर के अधिकारी को निकट बुलाया और एक बार चारों ओर घूमने का आदेश दिया। उसके घूमते समय मंत्री ने ध्यान से देखा कि कहीं उसके शरीर पर तलवार का घाव हो और उसके कपड़े कहीं फटे हुए हो! मगर ऐसी कोई बात न थी।

मंत्री ने सिर हिलाकर धीरे से खांस दिया, तब राजा से कहा—"महाराज, इसकी बातों से मालूम होता है कि हमारे देश के जंगलों में ऊँटों पर सवार करने वाले लोगों का एक दल आ गया है, पर यह जो युद्ध की बातें सुनाता है वे सब सरासर....."

मंत्री की बातें पूरी न हो पायी थीं, तभी सेनापति म्यान से तलवार निकाल कर आवाज़ करते वहाँ आ पहुँचा, राजा तथा मंत्री को प्रणाम करके खड़ा हो गया। मंत्री ने उसे चिड़िया घर के अधिकारी के द्वारा बतायी गयी सारी बातें सुनाकर कहा—"मुझे तो इस बात का आश्चर्य होता है कि ऐसे शक्तिशाली शत्रु के हमारे देश में घुस आने पर भी सेनापति बेखबर क्यों हैं? क्या अपने सीमा पर गुप्तचरों को तैनात नहीं किया? पड़ोसी राज्य की गतिविधियों का सदा चौकन्ने हो पता लगाना है।"

सेनापति मंत्री की अंतिम बातों पर चौंक पड़ा और चिड़ियाघर के अधिकारी की ओर तीव्र दृष्टि से देखा, तब राजा तथा मंत्री को संबोधित कर कहा—"आपने जो बातें सुनीं, उनमें कुछ हद तक सचाई है, पर इसकी बातों में काफ़ी अतिशयोक्ति भरी हुई है। ऊँटों पर घूमने वालों के संबंध में मैंने इसके पहले ही अपने गुप्तचरों के द्वारा पूरा समाचार इकट्ठा करने के लिए भेजा है। मगर गुप्तचर दल का एक ज़ंगली युवक एक खूबसूरत लड़की के साथ शादी करके उनमें मिल गया है, इसलिए पूरा समाचार इकट्ठा करने में थोड़ी देरी हो गयी है।"

"लगता है कि दुश्मन ने इस देरी का खूब उपयोग किया है। अब भी कोई बात नहीं, गुप्तचरों का चुनाव करते समय यह जान लेना ज़रूरी है कि उनके बीबी-बच्चे हैं कि नहीं। अब तुम्हें अनुभव हो गया है न कि ब्रह्मचारियों को गुप्तचर बनाकर भेजने से क्या होता है?" मंत्री ने क्रोध से कहा।

राजा ने मूँछों पर ताव देते हुए कहा—"सेनापति, और विलंब ही क्यों? सुनते हैं कि उस दुश्मन के दल का समरबाहु नामक कोई राजा भी है। उसने एक पहाड़ी क़िला भी बनवाया है। मैं तुम्हें आदेश

देता हूँ कि तुम शीघ्र भारी सेना के साथ जाओ, क़िले को मटियामेट करके उनके राजा को प्राणों के साथ पकड़ लाओ।"

"जी महाराज, जो आज्ञा!" सेनापति ने कहा। तब राजा तथा मंत्री को भी प्रणाम करके चला गया। एक सौ घुड़ सवारों तथा दो सौ पैदल सैनिकों को साथ ले जंगल के उस प्रदेश की ओर चल पड़ा, जहाँ समरबाहू के अनुचर क़िला बना रहे थे।

समरबाहू जब से भालू दल का बंदी हो गया था, तब से स्वर्णाचारी ही उनका नेता बना हुआ था। जो जंगली लोग जंगल में शिकार खेलने गये थे, वे कुछ जंगलियों तथा पिंजड़ों में स्थित खूँख्वार जानवरों के साथ लौट आये और जंगल की घटनाओं का समाचार सुनाया, तब स्वर्णाचारी निर्माणावस्था में स्थित पहाड़ी दुर्ग की रक्षा के लिए आवश्यक सभी प्रबंध करने लगा। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त की शक्तियों पर उसका अनुपम विश्वास था। वे भालू के दल से समरबाहू को मुक्त करके किसी भी क्षण ला सकते हैं। अगर इस बीच ये लोग वीरपुर के राजा के हमले से डरकर दुर्ग को छोड़ कहीं भाग जाय तो खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को उनका पता ही कैसे चलेगा? यही स्वर्णाचारी के लिए चिंता की बात थी।

स्वर्णाचारी ने यों सोचकर दुर्ग की रक्षा के लिए आवश्यक प्रबंध किया और पराजय

होने पर भागने के लिए एक-दो सुरंग मार्गों को चुना और सतर्कता के साथ रहने लगा। जंगलियों को खाने की चीज़ों के साथ थोड़ा धन भी दिया और एक गुफा में ऐसी जगह छिपे रहने का आदेश दिया जिस ओर से आसानी के साथ पहाड़ पर चढ़ा जा सकता था। पिंजड़ों के साथ सिंह और बाघ उन्हीं के अधीन में थे। दुश्मन क़िले पर चढ़ाई करने जब उस मार्ग से आयेगा, तब पिंजड़ों से वे लोग सिंह और बाघों को मुक्त कर देंगे। सिंह और बाघों के हमले के कारण जब दुश्मन के सैनिकों में जो हलचल मचेगी उसे आधार बनाकर जंगलों में ये लोग भाग सकते हैं या समरबाहू के अनुचरों की मदद करके उसके द्वारा थोड़े और पुरस्कार पा सकते हैं...

स्वर्णाचारी दुर्ग की रक्षा का आवश्यक प्रबंध करके दुश्मन का सामना करने के लिए तैयार हो गया था, ऐसी हालत में एक दिन सूर्योदय के समय ख़बर मिली कि वीरपुर की सेना हमला करने आ रही है। यह ख़बर जंगल में पहरा देनेवाले समरबाहू के अनुचरों के द्वारा मालूम हुई। स्वर्णाचारी ने अपने अनुचरों को भाले आदि देकर आदेश दिया कि ठीक पहाड़ के नीचे दुश्मन के आते ही किसी प्रकार की चेतावनी दिये बिना उन पर फेंके।

वीरपुर का सेनापति घुड़सवार तथा प्यादों के साथ पहाड़ के नीचे आया, म्यान से तलवार खींचकर समरबाहू के अनुचरों की ओर देख उच्च स्वर में बोला—"सुनो, मैं वीरपुर राज्य का सेनापति हूँ। तुम सब लोग अपने हथियार फेंककर आत्मसमर्पण कर लो; वरना तुम लोगों के टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा।"

उसी पहाड़ पर रहनेवाले समरबाहू के अनुचरों ने एक साथ वीरपुर के सैनिकों पर अपने भाले फेंकना शुरू कर दिया। उनमें से एक भाला वीरपुर के सेनापति के कंधे में जा घुसा। वह छटपटाने लगा।

(और है)

वचन-भंग

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन, मैं नहीं जानता कि शायद तुम किसी को वचन देकर वचन-भंग के डर से इस प्रकार श्रम उठा रहे हो, लेकिन लाचारी की हालत में कोई भी अपने वचन से मुकर सकते हैं। इसके प्रमाण स्वरूप मैं तुम्हें मगध के राजा वीरसिंह की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: वीरसिंह जब युवराज था, तब वह जब-तब जंगल में शिकार खेलने जाया करता था। एक दिन वह शिकार खेलकर, प्यास बुझाने के लिए एक तालाब के पास गया। वहाँ पर एक जंगली युवती तालाब में स्नान करते

दिखाई दी। उसके असाधारण सौंदर्य को देख वीरसिंह उस पर मोहित हो गया और बोला—"तुम जंगल में रहने योग्य नहीं हो! मुझसे विवाह करके समस्त प्रकार के सुखों का अनुभव करो।"

"अगर आप मेरे होनेवाले पुत्र को आपके बाद राज गद्दी देने को तैयार हो तो मैं आपके साथ शादी करूँगी।" युवती ने उत्तर दिया। वीरसिंह ने इस शर्त को मान लिया, उसके साथ विवाह किया और सुखपूर्वक दिन व्यतीत करने लगा।

इसके कुछ महीने बाद फिर राजा के मन में शिकार खेलने की इच्छा हुई। शिकार खेलने के बाद इस बार भी अपनी प्यास बुझाने के लिए वीरसिंह उसी तालाब के पास गया। वहाँ पर उसे फिर एक जंगली युवती स्नान करते दिखाई दी। वह पहली युवती से ज्यादा सुंदर थी। उसे देखने पर वीरसिंह मोह में पड़ गया और उसके साथ भी विवाह करने की इच्छा प्रकट की।

दूसरी युवती ने भी पहली स्त्री की भांति अपने होनेवाले पुत्र को वीरसिंह के बाद गद्दी दिलाने की मांग की। राजा ने उसे भी वचन दिया और अपने साथ लाकर विवाह करके उसे अपनी दूसरी पत्नी बना ली।

कुछ महीने और बीत गये। वीरसिंह ने शिकार से लौटते हुए इस बार भी उसी तालाब में नहानेवाली तीसरी जंगली युवती को देखा। वीरसिंह ने उसके साथ भी विवाह करने का प्रस्ताव रखा। तीसरी युवती ने भी इस शर्त पर राजा के साथ विवाह करने की सम्मति दी कि उसके होनेवाले पुत्र को राजा के अनंतर गद्दी मिले। वीरसिंह ने उसे भी वचन देकर विवाह कर लिया।

कुछ और महीनों बाद वीरसिंह ने शिकार खेलकर लौटते उस तालाब के किनारे चिंता में डूबी एक और जंगली युवती को देखा। मगर इस बार न राजा

उस पर मोहित हुआ और न उसने अपने साथ विवाह करने का प्रस्ताव ही रखा। बल्कि यही पूछा–"तुम कौन हो? इस प्रकार चिंतित क्यों बैठी हुई हो?"

"मेरी तीन बड़ी बहनें एक के बाद एक मुझसे कहे बिना कहीं चली गयीं और मुझे अकेली छोड़ गयी हैं। अब मेरे अपना कोई नहीं है।" युवती ने जवाब दिया।

वीरसिंह ने सोचा कि उसकी पत्नियाँ ही इस युवती की बड़ी बहनें होंगी। तब वह उस युवती को अपने साथ ले गया और उसे अपनी चौथी पत्नी के रूप में विवाह कर लिया।

इस घटना के थोड़े दिन बाद वीरसिंह का राज्याभिषेक हुआ। उसकी चारों पत्नियों ने चार पुत्रों का जन्म दिया। फिर भी चौथा राजकुमार सभी बातों में अपने बड़े भाइयों से भिन्न था। वह अपने बड़े भाइयों के साथ कभी मिलकर खेलता न था। अपने पिता से भी दूर रहना चाहता था। वह मौक़ा मिलते ही अपनी जाति के लोगों के बीच जंगल में जाता और वहीं पर अपना ज्यादा समय बिता देता था।

तीनों बड़े राजकुमार सदा अपने पिता के साथ रहते और उनकी सब प्रकार की सेवाएँ करते। मंत्री भी यह सोचकर कि उनमें से कोई एक होनेवाला राजा है, इसलिए उनको समझाता, वे भी मंत्री की बात मान लेते। मगर चौथा राजकुमार राजा का आदेश पाकर भी वह काम खुद न करता, बल्कि दूसरों को उस काम के लिए नियुक्त करता।

इस बीच एक विचित्र बात प्रकट हो गयी। चौथे राजकुमार को जंगली जाति के लोगों ने अपना सरदार चुना और उसे जंगल का राजा बनाया।

राजा की उम्र बढ़ती गयी। इसलिए मंत्री ने एक दिन राजा को सलाह दी कि युवराजा का निर्णय करके राज्य का थोड़ा भार उसे सौंप दे। इस पर वीरसिंह खुद जंगल में गया, अपने चौथे पुत्र को साथ

लाया और उसी का युवराज के रूप में राज्याभिषेक किया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, वीरसिंह ने अपनी तीनों पत्नियों को जो वचन दिया था, उसे क्यों तोड़ा? वचन भंग करने के बाद भी अपने प्रति अत्यंत श्रद्धा एवं भक्ति रखनेवाले तीनों बड़े राजकुमारों में से किसी को युवराज नहीं बनाया, बल्कि अपने प्रति लापरवाही दिखानेवाले चौथे पुत्र को लाकर युवराज के रूप में अभिषेक क्यों किया? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने यों उत्तर दिया– "अपने चौथे पुत्र को युवराज नियुक्त करने में वीरसिंह ने कोई वचन भंग नहीं किया है, जिस वक़्त राजा ने अपनी तीनों रानियों को एक ही प्रकार का वचन दिया है, तभी उसके वचन का मूल्य जाता रहा। वे वचन मोहावेश में असभ्य जंगली युवतियों को दिये गये वचन थे। यदि वे ही राजकुमारियाँ होतीं तो वीरसिंह ने इस तरह आगा-पीछा सोचे बिना कोरे वचन दिया न होता। उसकी बड़ी रानियों के पुत्र राज्य पाने की योग्यता नहीं रखते। उनकी मानसिक स्थिति गुलामी करनेवालों की सी है। वे लोग राजा तथा मंत्री के द्वारा सौंपे गये सभी काम बिना सोचे-समझे कर बैठते थे। चौथा व्यक्ति राजसी वृत्तिवाला था। यदि उसका पिता भी कोई काम सौंप देता तो वह स्वयं न करता, बल्कि उसके लिए योग्य व्यक्ति का चुनाव करके उसके द्वारा ही वह काम लेता। उसमें राजा बनने की योग्गता देखकर ही जंगली जाति के लोगों ने उसे जंगल का राजा बनाया था, इसीलिए वीरसिंह के द्वारा उसे युवराजा नियुक्त करने में कोई भूल नहीं हुई है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

चुकता

एक गाँव में आलोपीदीन नामक एक भोला आदमी था। एक बार उसे हठात् पाँच सौ रुपयों की जरूरत आ पड़ी। उसने गाँव में जाकर कई लोगों से कर्ज़ माँगा, फ़ायदा न रहा। आखिर निराश हो घर लौटते रास्ते में मंदिर पाकर उसमें घुस पड़ा। आखिरी प्रयत्न के रूप में उसने भगवान से प्रार्थना की– "भगवन्, आज मुझे जो भी धन मिलेगा, उसमें से आधा तुम्हें दूँगा।"

आश्चर्य की बात थी कि उस दिन वह खेत में जाकर काम कर रहा था, उसे खेत में एक हंडी मिली जिसमें एक हज़ार रुपये थे। आलोपीदीन बड़ा खुश हुआ। धन लाकर अपनी पत्नी के हाथ देते हुए उसे मनौती की बात बतायी।

आलोपीदीन की पत्नी ने सलाह दी– "मंदिर का निधिपालक सारा धन खा डालेगा, इसलिए तुम भगवान के नाम पर गरीबों को खाना खिलाओ।"

आलोपीदीन सीधे गाँव के मुखिये के पास गया, सारा समाचार उसे सुनाया। यह भी कहा कि वह गरीबों में अन्न दान करने जा रहा है। मुखिये ने प्रसन्न होकर ढिंढोरा पिटवाया कि दूसरे दिन गरीबों में अन्न दान होगा।

मंदिर के निधिपालक ने पुजारी के द्वारा आलोपीदीन की मनौती के बारे में सुना। उसे यह सुनकर संदेह हुआ कि वही आलोपीदीन गरीबों में अन्नदान कर रहा है। उसने मुखिये के पास जाकर पूछा। मुखिये ने बताया कि आलोपीदीन को एक हज़ार रुपये हाथ लगे हैं।

निधिपालक ने यह सवाल उठाया– "आलोपीदीन ने मंदिर को आधी रक़म देने की मनौती की थी, इसलिए उसे वह

श्यामधर शर्मा

धन प्राप्त हुआ है। न्याय तो यह होगा कि उसमें से आधा धन मंदिर को प्राप्त होना चाहिए। उस धन को इस प्रकार खर्च करना अन्याय है।"

मुखिया जानता था कि निधिपालक पैसा हड़पने में कुशल है। मगर उसका कहना सही प्रतीत हो रहा था। इसलिए मुखिये ने आलोपीदीन को बुलवा कर यह फ़ैसला सुनाया कि पाँच सौ रुपये वह मंदिर को दे दे।

ये बातें सुन आलोपीदीन चिंतित हो घर लौटा। पत्नी के पूछने पर आलोपीदीन ने सारी बातें बतायीं और कहा—"मैं किसी भी हालत में गरीबों में अन्न दान करने से बंद नहीं कर सकता। बाक़ी पाँच सौ रुपये मैं मंदिर को दे दूंगा।"

आलोपीदीन की पत्नी के दिमाग में अचानक एक बात सूझी, उसने वह बात अपने पति के कान में डाल दी।

दूसरे दिन गरीबों में अन्नदान हुआ। मगर अलोपीदीन ने निधिपालक को पाँच सौ रुपये लाकर नहीं दिये। वह गुस्से में आया। मुखिये के पास जाकर उसने आलोपीदीन के प्रति शिकायत की। मुखिये ने आलोपीदीन को बुलवा कर कैफियत माँगी। आलोपीदीन ने जवाब दिया—"साहब, क्या मैं भगवान का धन दबा लूँगा? देना ही चाहता हूँ।"

"तो फिर देरी ही क्यों?" निधिपालक ने क्रोध में आकर पूछा।

"धन देने के ही ख़्याल से मैंने दूसरे दिन भगवान से प्रार्थना की कि वे एक हज़ार और दिलावे तो उसमें भी आधा उनका हिस्सा दे दूंगा। कुल मिलाकर एक हज़ार भगवान को देना चाहा, लेकिन उस दिन मुझे एक भी रुपया नहीं मिला। मैंने जो मनौती की थी, वे एक हज़ार रुपये भगवान ने ही रखकर मेरी मनौती के उधार को चुकता कर लिया है। यही मैंने सोचा है!"

इस पर मुखिया हँस पड़ा और निधिपालक की शिकायत रद्द कर दी।

कुआँ और पानी

किशन नामक एक किसान का एक कुआँ था। गरीब होने की वजह से उसने अपनी ज़रूरत के वास्ते उसे बेचना चाहा। मगन नामक एक दूसरे किसान ने सौदा किया और उस कुएँ को छे सौ रुपयों में ख़रीद लिया।

कुछ महीने बाद किशन ने मेहनत करके थोड़ी सी ज़मीन कमा ली। उसे कुएँ की पानी की ज़रूरत पड़ी। उसने मगन के पास जाकर पूछा—"मैं तुम्हें तुम्हारे रुपये लौटा देता हूँ, कुआँ मुझे वापस दे दो।"

"तुम दुगुना दाम दो, तब भी मैं इस कुएँ को तुम्हें लौटाऊँगा नहीं।" मगन ने साफ़ जवाब दे दिया।

किशन को बड़ा क्रोध आया, उसने मुखिये के पास जाकर शिकायत की। मुखिये ने मगन को बुलाकर पूछा तो उसने वही उत्तर दिया।

तब किशन ने मुखिये से कहा—"मैंने मगन को कुआँ ज़रूर बेच दिया है, मगर कुएँ का पानी मैंने नहीं बेचा। इसलिए वह पानी मेरा है।"

यह बात सुनकर मगन ने मुखिये से कहा—"साहब, तब तो किशन से कहिये कि वह मेरे कुएँ से अपना सारा पानी ले जावे। यदि वह अपना सारा पानी नहीं ले गया तो अपने पानी को मेरे कुएँ में रखने के एवज में मुझे मासिक पंद्रह रुपये किराया चुकाना होगा।"

यह बात सुन किशन का सिर लज्जा से झुक गया।
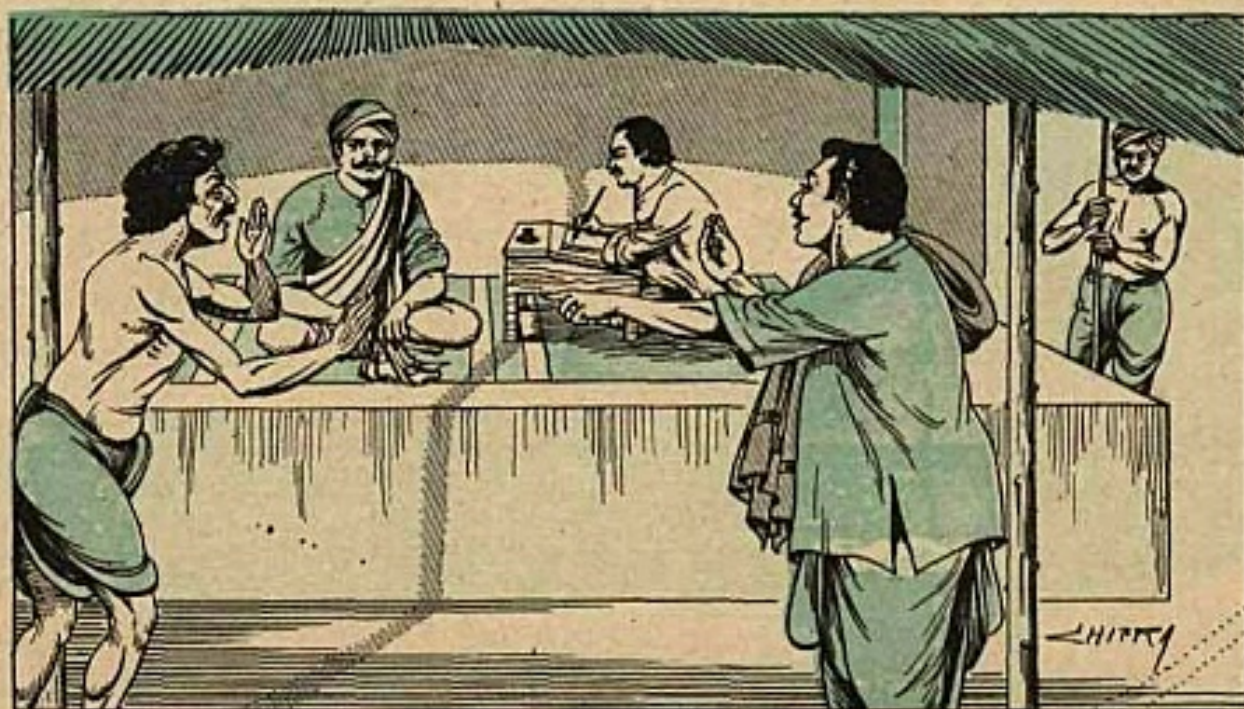
फ़ैसले की चतुराई

प्राचीन काल में कांचीपुर में इंद्रभूपति नामक एक जैनमुनि था। उसके दर्शन करने के लिए दो जैन साधू अपने नगर से चल पड़े और रास्ते में दुपहर को दोनों ने एक भवन में विश्राम किया।

दोनों ने अपने खाने की पोटलियाँ खोल दीं। एक कुत्ता पूँछ हिलाते उनके पास आया। उनमें से एक को कुत्ते पर दया आयी, उसने अपने खाने से थोड़ा-सा हिस्सा कुत्ते के आगे डाल दिया। इसके बाद वे पानी लाने के लिए लोटे लेकर चल पड़े। चलते-चलते अपने खाने की पोटलियों को पेड़ के एक खोखले में छिपाया। पानी लेकर जब लौटे तो देखते क्या हैं, कुत्ता पोटली को नीचे खींचकर बचा हुआ खाना भी खा रहा है।

उस पोटली का मालिक भूखा था। इस लिए गुस्से में आकर उसने पानी का लोटा कुत्ते पर फेंक दिया। चोट खाकर चिल्लाते कुत्ता भाग गया।

"कु ो विश्वासपात्र जानवर कहना गलत है। मैंने उस पर रहम खाकर खाना दिया तो उसने मेरी पोटली को ही झूठा कर दिया। उसे मार भी डाले तो भी पाप न होगा।" एक ने कहा।

इस पर दूसरे समझाया—"अब जो घटना हो गयी है, इसके आधार पर हम यह नहीं कह सकते कि कुत्ता विश्वासपात्र जानवर नहीं है। मुझे लगता है कि हमने ही भूल की है; हमने अपनी पोटलियों को इस तरह रखा जिससे कुत्ता उन्हें आसानी से खींचकर खा सके। विवेक रखनेवाले मनुष्य ही गलत काम करते हैं तो भला-बुरा न जाननेवाले कुत्ते को अपराधी ठहराकर मारना ठीक नहीं है।"

लीलाधर राय

“उसने जो गलती की, उसके लिए अच्छा दण्ड दिया मैंने।” पहले ने अपनी करनी का समर्थन किया।

“कुत्ते की करनी को गलत बताना नंदिवर्मा के फ़ैसले के बराबर है।” दूसरे ने कहा।

“नंदिवर्मा कौन है? उसका फ़ैसला क्या है?” पहले ने पूछा।

दूसरे ने अपने खाने का आधा हिस्सा पहले को बाँट कर दिया और नंदिवर्मा की कहानी सुनायी—“नंदिवर्मा कांचीपुर का शासक था। वह न्यायशील था। जो कोई अपराध करता, उसका फ़ैसला करके उचित दण्ड दिया करता था। उसे इस बात का घमण्ड भी था कि न्यायपूर्ण फ़ैसला सुनाने में उसकी बराबरी करनेवाला कोई नहीं है।

एक बार महामुनि इंद्रभूपति राजा को आशीर्वाद देने के विचार से राज दरबार में आया। उस वक़्त राजा एक चोर के अपराध का फ़ैसला सुना रहा था। चोर ने एक व्यापारी के घर चोरी की थी। चोरी भी साबित हो चुकी थी। नंदिवर्मा ने उस चोर को कारागार की सज़ा सुनायी और महामुनि इंद्रभूपति से पूछा—“मेरा फ़ैसला कैसा है?”

“इस फ़ैसले में मुझे सूक्ष्म न्याय थोड़ा भी दिखाई नहीं देता। चोर चोरी करके

सज़ा पा गया। यह राज नियम है। यह सब साधारणतः होता ही है। इस क़ानून और दण्ड के द्वारा चोरियाँ बंद नहीं होतीं। धर्म-सूक्ष्म पर विचार करने से मालूम होगा कि चोर के साथ व्यापारी और राजा याने तुम भी दण्ड के अधिकारी हो। मगर इस संसार में धर्म-सूक्ष्मता पर विचार करनेवाला कौन है?” यों इंद्रभूपति ने गहरा निश्वास लिया।

यह बात सुनते ही राजा का चेहरा विवर्ण हो गया। व्यापारी के मन में भी अपने अपराध को जानने की जिज्ञासा हुई, लेकिन मुनि से पूछने की उसकी हिम्मत न हुई।

इतने में मुनि इंद्रभूपति ने ही यों बताया–"समस्त शास्त्रों का अध्ययन करके, धर्म के रहस्यों को जाननेवाले सोमदत्त नामक ब्राह्मणश्रेष्ठ ने ही देवस्व को चुराया है। उसके सामने यह चोरी ही क्या है?"

सोमदत्त का वृत्तांत सुनने की राजा ने इच्छा प्रकट की, तब मुनि ने यों बताया– "एक बार जैनों के प्रत्यक्ष देवता जैसे वर्द्धमान जंगल में तपस्या कर रहे थे, तब देवेन्द्र ने उनका आदर करने के विचार से दो जोड़ी देवता वस्त्र ला दिये। प्रत्येक जोड़ी के वस्त्रों में से एक पहनने के लिए और दूसरा ओढ़ने के लिए था। वर्द्धमान ने एक जोड़ी वस्त्र धारण किये और दूसरी जोड़ी अपने पास रख ली। उस वक़्त सोमदत्त नामक एक महापंडित वर्द्धमान के दर्शन करने आया और देवता वस्त्रों की ओर देख पूछा–"भगवन, मुझे एक वस्त्र दान क्यों नहीं देते?" वर्द्धमान ने वस्त्रों की जोड़ी में से एक वस्त्र को सोमदत्त के हाथ दे दिया, पर सोमदत्त इससे तृप्त न हुआ, जब वर्द्धमान ध्यान में निमग्न थे, तब सोमदत्त दूसरे वस्त्र को भी चुराकर अपने रास्ते चला गया।

वर्द्धमान ने बाद को आँखें खोलकर देखा, सारी बात जानकर सोचने लगे– 'सोमदत्त ने जब एक वस्त्र माँगा तब मुझे दोनों वस्त्र उसे दे देने थे, उसकी चोरी करने का कारण मैं ही हूँ। दूसरे के पास जो चीज़ नहीं है, उसे अपने पास रखना गलत है।' यह सोचकर अपने धारण किये देवता वस्त्र को लंगोटियों के रूप में फाड़ दिया, उन्हें अपने शिष्यों में बांटकर एक को उसने भी धारण किया।

यह कहानी सुनकर नंदिवर्मा अपने फ़ैसले के अज्ञान को समझ कर शर्मिंदा हुआ। चोर को क्षमा करके उसे सुख के साथ जीने के लिए आवश्यक सुविधाएँ कर दीं। यह सब सुनने के बाद पहला जैन सन्यासी कुत्ते को मारने की घटना पर पछताने लगा।

सच्चा कवि

एक देश में एक खाँ साहब था। उस देश में कई कवि और गायक भी थे। वे सब अच्छे अच्छे गीत रचकर खाँ साहब के सामने गाते और उसे खुश करते थे।

एक बार खाँ ने एक गीत सुना। उसमें खाँ की क्रूरता और अन्याय की निंदा की गयी थी। खाँ ने नाराज़ होकर उस गीत को रचनेवाले कवि को पकड़ लाने का अपने सेवकों को आदेश दिया। सेवकों ने बड़ी खोज की, पर वह कवि नहीं मिला।

इस पर खाँ ने अपने राज्य के सभी कवियों को पकड़वा कर बंदी बनाया और उनसे पूछा—"तुममें से किसने मेरी क्रूरता और अन्याय के बारे में गीत रचा है?" लेकिन किसीने नहीं बताया।

तब खाँ ने हर एक कवि को आज्ञा दी कि उसने जो गीत लिखा है, वह गाकर सुना दे। प्रत्येक ने खाँ की दया और न्याय की तारीफ़ करते गीत गाया। इस पर खाँ ने उन सबको क़ैद से रिहा कर दिया, मगर उनमें से एक ने अपना गीत गाने से इनकार किया।

उस कवि को एक चिता के पास लाकर खाँ ने पूछा—"तुम नहीं गाओगे, तो इस चिता में प्राणों के साथ जला दिये जाओगे।" तब भी उसने गीत नहीं गाया। उसके हाथ-पैर बांधकर चिता पर चढ़ा करके खाँ ने पूछा—"अब भी सही गाओगे या मर जाओगे?"

तब उस कवि ने गीत गाया। उसमें खाँ की क्रूरता और अन्याय की निंदा की गयी थी। उस गीत को सुनते ही खाँ चिल्ला उठा—"यही एक सच्चा कवि है। इसको चिता से उतार दो।"
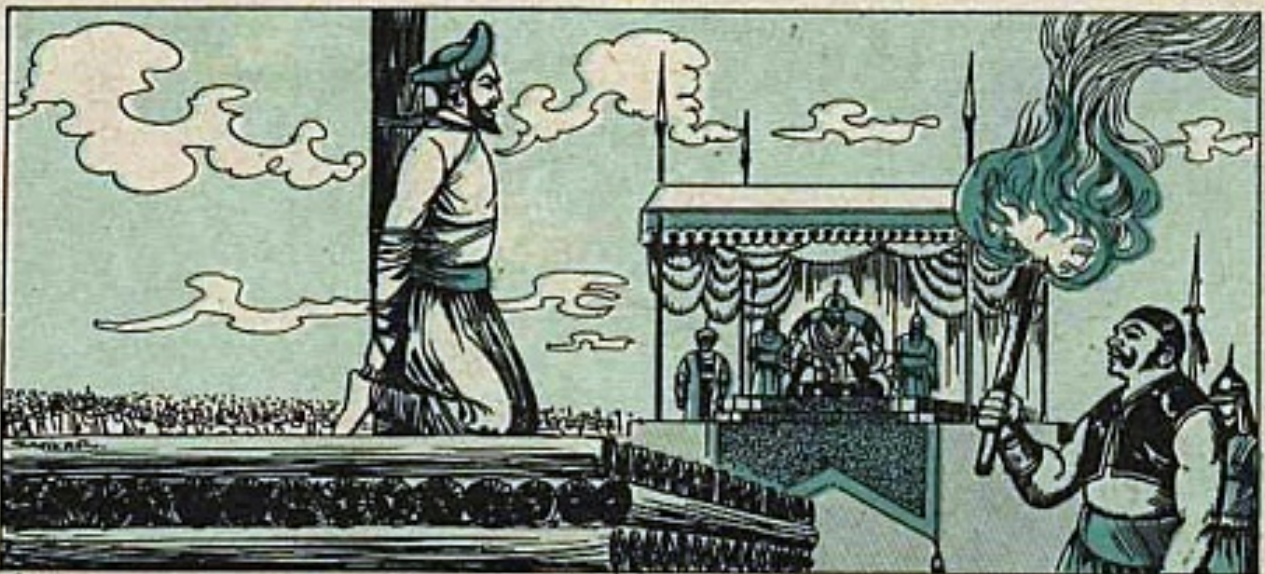
आशा का अंत

एक गाँव में राम शास्त्री एक पुरोहित था। आस-पास के गाँवों में कोई भी कर्मकण्ड होता तो रामशास्त्री को जरूर बुलाते थे। एक बार पड़ोसी गाँव के पटवारी की कन्या का विवाह हुआ। रामशास्त्री ने जाकर पुरोहिताई की। शादी के समाप्त होते ही पटवारी ने शास्त्री के लिए थोड़ी-सी मिठाइयाँ बँधवा कर दीं।

रामशास्त्री जंगल के रास्ते चला आ रहा था। इतने में अंधेरा फैल गया। वह एक इमली के पेड़ के नीचे पहुँचा ही था कि अचानक उसे एक पिशाच दिखाई दिया और बोला–"वाह, तुम ठीक वक़्त पर आ गये हो। भूख से मरा जा रहा हूँ। मनुष्य का माँस खाये काफ़ी दिन हो गये हैं।"

पिशाच को देख रामशास्त्री जरा भी नहीं घबराया, बल्कि हिम्मत के साथ बोला–"अरे मनुष्य के माँस के वास्ते मुझे मार कर खा डालोगे तो इस ओर से कोई नहीं जायेगा। मेरे माँस से भी दस गुने ज़्यादा स्वादिष्ट पदार्थ देता हूँ। शायद ये तुमको पसंद आ जाये।"

"दिखाओ तो सही?" पिशाच ने पूछा। रामशास्त्री ने अपनी पोटली खोल कर कहा–"देखो, ये लड्डू हैं, ये जिलेबियाँ हैं, और ये पेड़े हैं।"

"वाह, वाह, बहुत बढ़िया है।" यों कहते पिशाच ने सब खा डाले और पूछा–"बस, और नहीं हैं क्या?"

"और चाहे तो कल ला दूंगा। मैं गरीब ब्राह्मण हूँ। ये मिठाइयाँ तैयार करने के लिए कई चीज़ें खरीदनी हैं, पर मेरे पास धन नहीं है।" रामशास्त्री ने जवाब दिया।

यमुना दत्त

"धन मैं दे देता हूँ।" यों कहकर पिशाच पेड़ के खोखले में घुस पड़ा, दूसरे ही मिनट दोनों हाथों से सोने के सिक्के लाकर ब्राह्मण के हाथ दिये। फिर क्या था, रामशास्त्री ने बड़ी खुशी के साथ सोने सिक्के ले लिये।

"तुम रोज़ इसी वक़्त इस पेड़ के पास मिठाइयाँ लाओगे तो तुम्हें इसी प्रकार सोना दे दूँगा।" यों कहकर पिशाच चला गया। रामशास्त्री अपने आराध्य देवता का स्मरण करते घर पहुँचा। सारा सोना अपनी पत्नी के सामने डाल कर सारी कहानी उसे सुनायी।

शास्त्री की पत्नी ने सोचा कि उसका पति पिशाच के चंगुल से बचकर घर पहुंच गया है, खुश होकर बोली–"हम इस सोने को बेच कर दो पीढ़ी तक आराम से जी सकते हैं। आइंदा तुम पिशाच के पास मत जाओ, उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता है।"

"हाँ, हाँ! तुम्हारा कहना बिलकुल सच है! जो कुछ हमें हाथ लगा है, उसीसे हमें संतुष्ट होना चाहिए।" शास्त्री ने कहा।

शास्त्री के घर पहुँचते ही पड़ोसिन विवाह के समाचार सुनने के ख्याल से शास्त्री के घर आ पहुँची। मगर सोने के

सिक्कों को देखते ही वह बाहर अंधेरे में ही रुक गयी और शास्त्री तथा उसकी पत्नी की बातचीत सुनने लगी।

इसके बाद वह झट अपने घर लौट गयी। अपने पति को सारा समाचार सुनाकर बोली–"वह पगला ब्राह्मण पिशाच के पास जानेवाला नहीं है। मैं लड्डू, जलेबी वगैरह बनाकर देती हूँ। तुम कल रात को इन्हें पिशाच के हाथ सौंप कर सोना लेते जाओ। हम रोज़ इस तरह सोने के सिक्के ला सकते हैं।" ये बातें सुन उसका पति भी बड़ा प्रसन्न हुआ।

दूसरे दिन शाम को सोमदास ने अपनी पत्नी के हाथों से पच्चीस-पच्चीस लड्डू,

जलेबी और पेड़े बनवाये, उन्हें लेकर इमली के पेड़ के पास पहुँचा।

ठीक वक़्त पर पिशाच आ पहुँचा और सोमदास से पूछा–"क्या तुम मिठाइयाँ लाये हो?"

सोमदास ने मिठाइयों की पोटली पिशाच के सामने रख दी। पिशाच ने सारी मिठाइयाँ खाकर दोनों हाथों से सोने के सिक्के ला दिया और कहा–"तुम रोज़ इसी तरह मिठाइयाँ लाओ, तुम्हें सोना देता रहूँगा।"

सोमदास के मन में धन के प्रति लोभ अधिक था, पर शास्त्री के जैसे वह हिम्मतवर न था। पिशाच को देखते ही उसका शरीर कांप उठा। उसके चले जाने तक वह डरता ही था। सोने के सिक्के लाकर पत्नी के हाथ देते हुए बोला–"यह व्यापार बड़ा ही लाभदायक ज़रूर है, पर रोज़ उस पिशाच से मिलने में डर लगता है।"

तब सोमदास की पत्नी ने बताया–"हाँ, मुझे एक बात सूझती है। पिशाच इमली के पेड़ के खोखले में से सोना लाता है। अगर हम दिन के वक़्त जाकर खोखले का सारा सोना लायेंगे तो पिशाच के साथ हमारा कोई संबंध न होगा।"

यह विचार सोमदास को भी बड़ा अच्छा लगा। वह सवेरे ही इमली के पेड़ के पास एक कुल्हाड़ी ले आया; खोखले के नीचे कोयले के चूर्ण के सिवाय कुछ न था। सोमदास ने सोचा कि यह यक़ीन न करेगी। इसलिए कोयले का थोड़ा चूर्ण बांध कर ले आया। उसे अपनी पत्नी को दिखाकर घर के एक कोने में चूर्ण को फेंक दिया।

चूर्ण के नीचे गिरते ही उसमें से लपटें निकलीं, पल-भर में सारा घर जल कर राख हो गया। सोमदास का सर्वस्व जल गया। वे पति-पत्नी प्राणों के साथ बाहर आ सके। सब-कुछ खोकर उस गाँव में रहने की उन्हें इच्छा न हुई। इसलिए वे दोनों किसी दूसरे गाँव के लिए चल पड़े।

नीतिवान

एक गाँव में एक गरीब वैश्य परिवार था। उस परिवार में वृद्ध माता-पिता और उनका एक पुत्र था। वह परिवार छोटा-मोटा व्यापार करता था, पर उससे उनका निर्वाह होना मुश्किल था। इसलिए युवक रामू ने निश्चय कर लिया कि शहर में जाकर वह बड़े व्यापारियों के यहाँ काम सीखते हुए फिलहाल अपना पेट भर लेगा और मौक़ा मिलते ही वह भी एक बहुत बड़ा व्यापार शुरू करेगा। माता-पिता ने भी इसके लिए सम्मति दी।

रामू अपनी यात्रा के ख़र्च के लिए आवश्यक खाना, कपड़े व अन्य चीज़ें लेकर दूर के एक शहर की ओर चल पड़ा। रास्ते में एक तीर्थ पड़ता था। वहाँ पर एक तालाब और अमरनाथ का मंदिर भी था। अमरनाथ मंदिर के पास एक बारात का दल ठहरा हुआ था। राघव गुप्त नामक एक धनी बनिया अपनी पुत्री यशोदा का विवाह एक दूसरे शहर के करोड़पति के पुत्र जयदेव गुप्त के साथ करने जा रहा था। दोनों पक्षों के लोग मंदिर के पास पहुँच गये थे। विवाह के लग्न में दो-तीन घड़ी का समय बचा था। इसलिए सब कोई अपने अपने काम में मशगूल थे।

रामू ने मंदिर के पास स्थित तालाब में स्नान करके मंदिर में पूजा करने जाना चाहा, इसलिए अपनी गठरी रखने के लिए किसी सुरक्षित स्थान को ढूंढने लगा। एक पेड़ के नीचे उसे एक बूढ़ी दिखायी दी। उसके समीप में कई गठरियाँ थीं। रामू ने बूढ़ी के पास जाकर कहा—"नानीजी, मैं स्नान और भगवान के दर्शन करके अभी लौट आता हूँ, तब तक मेहर्बानी करके इस गठरी पर निगरानी रखो।" यों कहकर रामू चला गया। तालाब में स्नान

राजकुमार सोनिया

करके मंदिर में गया, भगवान से प्रार्थना की कि शहर में उसके प्रयत्नों को सफल बनावे। इसके बाद वह बूढ़ी से गठरी लेकर अपने रास्ते चला गया।

थोड़ी दूर जाने पर रामू को भूख लगी। वह एक तालाब के पास रुक गया। खाने के विचार से गठरी खोल दी। मगर उसमें खाना या कपड़े न थे, बल्कि सोने के आभूषण और रुपये थे। वह गठरी बरातियों की थी। बूढ़ी ने भूल से एक गठरी के बदले दूसरी गठरी उसके हाथ दे दी थी।

यह बात मालूम होने पर रामू अमरनाथ मंदिर के पास लौट आया। इस बीच वर और वधू पक्ष वालों के बीच झगड़ा शुरू हो गया था।

वधू का पिता राघव गुप्त कह रहा था कि गहने व रुपयों की गठरी कहीं खो गयी है, लेकिन वर का पिता गुस्से में आकर डाँट रहा था–'यह सब सरासर झूठ है, फ़रेब है। ऐसा रिश्ता करना अपने लिए अपमान की बात है। उसकी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी।'

राघव गुप्त नम्र शब्दों में समझा रहा था कि वह झूठ नहीं बोल रहा, सच्ची बात कह रहा है। मुहूर्त पर अगर शादी न हुई तो उसकी कन्या के साथ कोई शादी नहीं करेगा। इसलिए विवाह के बाद वह वे सारे गहने फिर से बनवा कर दे देगा। यों कहते वह अपने समधी के पैरों पर गिरकर गिड़ गिडाने लगा।

मगर वर का पिता ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। उसने साफ़ कह दिया कि उसका जो अपमान हो गया है, उसे वह कभी क्षमा नहीं कर सकता है।

यह घटना हो रही थी, तभी रामू ने वहाँ लौटकर राघव गुप्त से पूछा–"इस पेड़ के नीचे गठरियाँ रखकर बैठी हुई नानी जी कहाँ पर हैं?"

"वही मेरी माताजी थीं। उन्हीं की भूल से यह झगड़ा चल रहा है।" राघव गुप्त ने जवाब दिया।

"अजी, लीजिए! नानी जी ने यह गठरी मेरे हाथ दी, इसमें गहने और रुपये हैं। इसे लेकर मुझे अपनी गठरी दिला दीजिए।" रामू ने कहा।

बरातियों के बीच जो विवाद उठ खड़ा हुआ था, वह शांत हो गया। राघव गुप्त झूठ नहीं बोला था, वर पक्षवालों के साथ उसने कोई धोखा नहीं दिया था। गहने हैं, इसलिए विवाह के होने में अब कोई आपत्ति न थी और न मुहूर्त का समय भी टला था।

तब राघव गुप्त ने रामू का परिचय यशोदा के साथ कराते हुए कहा–"बेटी, इस युवक ने हमारी इज्ज़त बचा ली है। अब तुम्हारा विवाह बेरोकटोक हो जाएगा।" यशोदा ने रामू से उसका पूरा परिचय जान लिया।

"बेटा, तुमने हमारी बड़ी मदद की, मेरी बेटी का विवाह पूरा होने तक यहीं
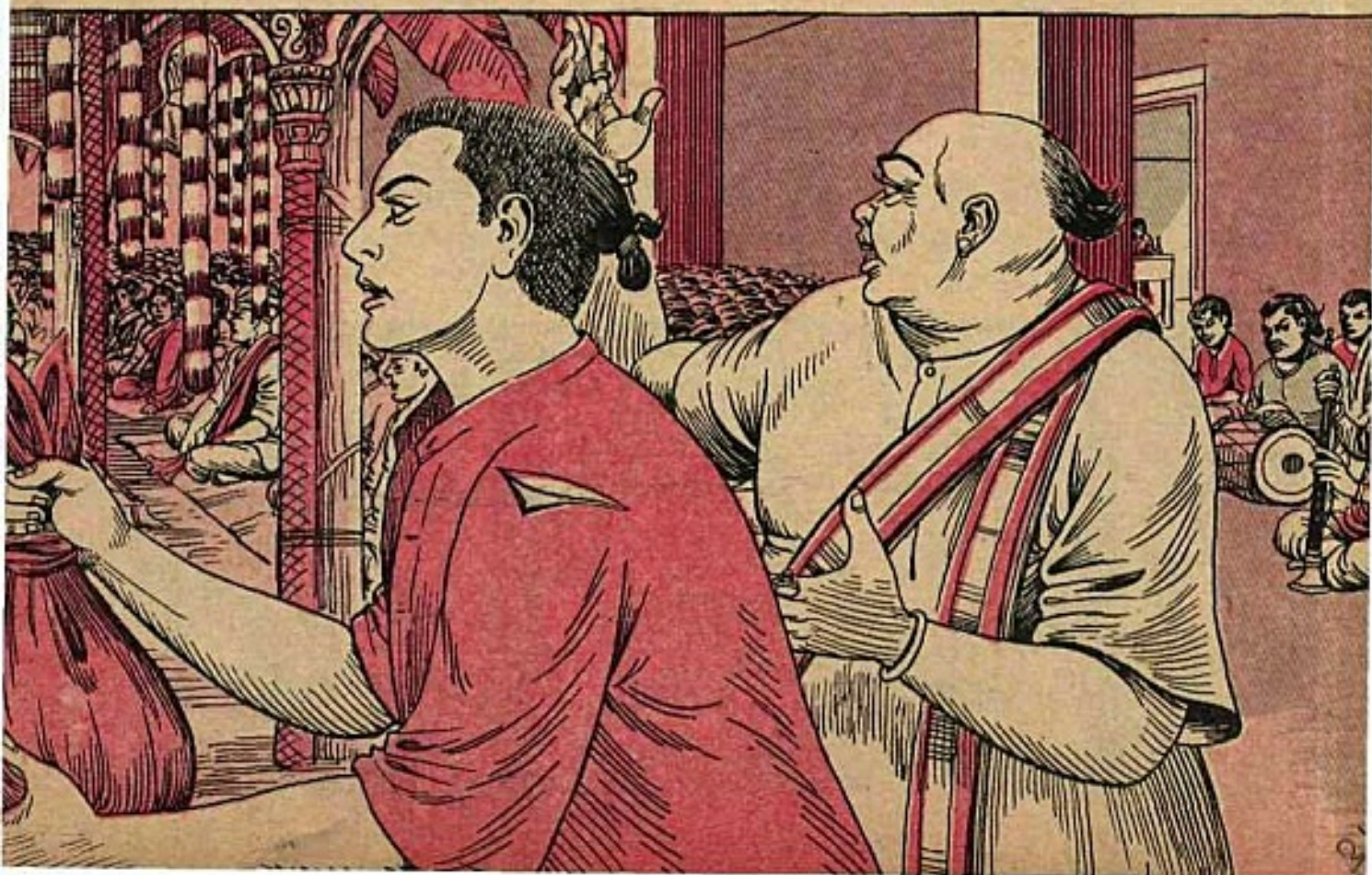
रहो, तब जाओ।" राघव गुप्त ने कहा। रामू उनका अतिथि बनकर वहीं रह गया।

विवाह के रस्म शुरू हो गये। वर और वधू विवाह-वेदिका पर आकर बैठ गये। वधू के पिता ने दहेज़ के रूप में गहने और नक़द को एक थाली में रखकर वर-वधू के सामने रखा।

मंगलसूत्र बांधने का समय आया। वर जयदेव गुप्त यशोदा के कंठ में मंगलसूत्र बांधने को उठा। यशोदा ने उसे गहनों वाली थाली दिखाकर कहा—"मंगलसूत्र उस थाली को बाँध लो; तुम्हें जो गहने व रुपये चाहिए, वे सब उस थाली में हैं। तुम मेरे साथ विवाह करने को नहीं आये, इन गहनों और रुपयों के वास्ते आये हो। तुम्हारे पास चाहे जितना भी धन हो तो क्या फ़ायदा? चरित्र नहीं है।" इसके बाद सामने खड़े हुए रामू को दिखाकर फिर कहा—"वह गरीब है। वह आजीविका के वास्ते अपने गाँव को छोड़ कहीं जा रहा है। लेकिन भूल से उसके हाथ में गहनों की गठरी आ गयी तो उसे बड़ी सुरक्षा के साथ लाकर वापस दे दिया है। उसके चरित्र में जो नीति है, उसमें एक शतांश भी तुम लोगों में नहीं है। अगर मैं अपने कंठ में मंगलसूत्र बंधवाऊँगी तो ऐसे ही युवक के साथ बंधवाऊँगी।"

वरपक्षवाले हाहाकार मचाने लगे। इसके पहले वे जिसे अपने लिए अपमान की बात समझते थे, वह सचमुच अपमान न था, पर यही उनका सच्चा अपमान था। राघव गुप्त ने अपनी बेटी को समझाना चाहा, मगर उसने हठ किया कि वह रामू को छोड़ किसी दूसरे के साथ शादी न करेगी। राघव गुप्त के कुछ रिश्तेदारों ने यशोदा की करनी का समर्थन किया। विवाह के सारे प्रयत्न व्यर्थ न हो जायँ, इसलिए रामू ने ही यशोदा के कंठ में मंगलसूत्र बांध दिया। वरपक्षवाले बुरी तरह से पराजित सेना की भाँति अपने गाँव की ओर चल पड़े।

राजकुमारी का साहस

वल्लभपुर का राजा रंगादित्य कई वर्षों तक संतान के अभाव में दुखी था। आखिर उन्हें एक पुत्री हुई। राजा ने राजकुमारी का नामकरण 'सुखलता' किया और बड़े ही लाड़-प्यार से उसका पालन-पोषण करने लगा। दरबार के सभी लोग राजकुमारी को हृदय से चाहते थे।

सुखलता की अवस्था ज्यों-ज्यों बढ़ती गयी, त्यों-त्यों वह अन्य सभी विद्याओं के साथ युद्ध-विद्याएँ भी सीखती गयी। रंगादित्य को यह बात कदापि पसंद न थी। मगर सुखलता ने हठ किया कि वह राजकुमारी के रूप में नहीं, बल्कि राजकुमार के रूप में पाला जाय!

सुखलता जब पंद्रह साल की हो गयी, तब वल्लभपुर की पश्चिमी सीमा पर स्थित जंगली दल ने विद्रोह किया। यह बात सुनने पर सुखलता ने अत्यंत उत्साह के साथ कहा—"मैं सेना के साथ जाकर उस विद्रोह को दबाऊँगी।"

रंगादित्य चकित रह गया। उसने अपने मंत्री धीमान से कहा—"इस कन्या का क्या उद्देश्य है? इसकी अवस्था बहुत ही छोटी है, फिर भी यह सेना का नेतृत्व करके युद्ध में जाना चाहती है?"

"महाराज, राजकुमारी में ऐसी शक्ति का अभाव नहीं है। इसने बहुत ही अच्छा प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है। सेना तो उसके अधिकार में होगी। सारे सैनिक राजकुमारी के प्रति अत्यंत आदर दिखाते हैं। मेरा विश्वास है कि इस विद्रोह को दबाने में राजकुमारी अत्यंत समर्थ हैं।" मंत्री धीमान ने समझाया।

"यह सब मैं कुछ नहीं जानता। यह तो अभी बच्ची है। खिलौनों से

ए. सी. सरकार, जादूगर

खेलनेवाली लड़की का युद्ध क्षेत्र में जाना कैसे? मैं इसे कभी स्वीकार नहीं कर सकता।" राजा ने कहा।

रानी ने भी राजा की बातों का समर्थन करते हुए कहा–"महा मंत्रीजी, आप यह क्या बताते हैं? आप भी लड़की का समर्थन कर रहे हैं? कहीं औरतें युद्ध करती हैं? हमारे पास हजारों महान योद्धा हैं। किसी को भेज दीजिए।"

"महारानीजी, राजकुमारी उम्र में छोटी है, पर उनको साधारण औरत न समझिये। वह सभी विद्याओं में पारंगत हो चुकी हैं।" मंत्री ने कहा।

"ये सारी बातें मैं सुनना नहीं चाहती, बस, राजकुमारी युद्ध करने नहीं जा सकती।" रानी ने स्पष्ट बताया।

सुखलता ने निराश हो महा मंत्री की ओर देखा। मंत्री ने इशारा करके राजकुमारी में आशा जगायी।

दरबारी जादूगर कुछ कहने के अभिप्राय से उठ खड़ा हुआ और बोला–"राजकुमारी युद्ध में जाने को उत्सुक है। महा मंत्री उसकी इच्छा का समर्थन कर रहे हैं। पर महाराजा और महारानी को यह बात पसंद नहीं है। इससे राजकुमारी का उत्साह-भंग हो गया है। यह बात तर्क से निर्णय होनेवाली नहीं है। सारा भार ईश्वर पर डालकर हम चिट निकालेंगे, सारी समस्या हल हो जाएगी।"

"पिताजी, आप इसके लिए मान जाइये न?" सुखलता ने अपने पिता से गिड़गिड़ाते हुए पूछा।

रंगादित्य ने गहरी सांस लेकर कहा–"अच्छी बात है! हम ईश्वर का निर्णय मान लेंगे।"

"तब तो चिट निकालने का काम शुरू करेंगे।" यों कहकर इंद्रपाल बगल में ही स्थित मंत्री के कार्यालय में गया, कुछ सफ़ेद कागज़ के टुकड़े और लिखने की सामग्री लेकर लौट आया, तब कागज़ का एक टुकड़ा हाथ में लेते हुए बोला–"महाराज, सेना का संचालन करने के लिए आप किसका नाम सूचित करेंगे?"

"गंगाधर!" राजा ने कहा।

इंद्रपाल ने "गं-गा-धर" उच्चारण करते कागज़ के टुकड़े पर लिखा और उसे तह करके मोड़कर बगल में रख दिया।

इसके बाद इंद्रपाल ने राजा से ही एक और नाम सुझाने को कहा।

"रघुपति!" राजा ने दूसरा नाम बताया।

"र-घु-प-ति" उच्चरित करते इंद्रपाल ने एक और चिट लिखा, उसे भी तह करके मोड़कर बगल में रख दिया। इसके बाद इंद्रपाल ने मंत्री से एक नाम सुझाने को कहा।

"सुखलता!" मंत्री ने झट जवाब दिया।

"सु-ख-ल-ता" का उच्चारण करते इंद्रपाल ने एक और चिट लिखकर उसे भी तह करके रख दिया।

इसी प्रकार राजा ने और नौ लोगों के नाम बताये। इंद्रपाल ने और नौ चिट लिखकर तह करके रख दिये।

सब चिटों को इंद्रपाल राजा के पास ले आया और उनमें से एक चिट निकालने की राजा से प्रार्थना की। राजा ने एक चिट निकाला। तब इंद्रपाल ने तुरंत बाक़ी सारे चिट जलाकर राख कर दिया और राख को उठाकर फेंक दिया।

इस बीच रंगादित्य ने बड़ी आतुरता के साथ चिट ख़ोलकर कंपित स्वर मे पढ़ा– "सुखलता"। इस पर लाचार होकर राजा ने अपनी पुत्री को अस्त्रधारण करके विद्रोह को दबाने की अनुमति दे दी। सुखलता युद्ध के लिए तैयार हो सेनाओं को साथ ले चल पड़ी। विद्रोहियों के साथ युद्ध करके उनको हराया। विद्रोही नेता को बंदी बनाकर विजयलक्ष्मी को साथ ले राजधानी को लौट आयी।

माता-पिता ने बड़े ही प्यार के साथ उसका आलिंगन करके उसे चूम लिया। सारी जनता बहुत ही प्रसन्न हो उठी। राजधानी भर में उत्सव मनाये गये।

इसके बाद मौक़ा देख सुखलता ने मंत्री तथा इंद्रपाल को अपने कक्ष में निमंत्रित करके उन्हें भोज दिया। पुरस्कारों के साथ उनका सत्कार करने के बाद मंत्री से पूछा–"महा मंत्रीजी, आप मेरी इच्छा की पूर्ति कैसे कर पाये?"

"बेटी, मैं कुछ नहीं जानता, इंद्रपाल ने ही कोई जादू किया है।" मंत्री ने कहा।

इंद्रपाल ने गुप्त रूप से बताया– "राजकुमारीजी, इसमें कौन बड़ी बात थी? मैंने सब चिटों पर तुम्हारा ही नाम लिख दिया। प्रकट रूप में दूसरे नामों का उच्चारण किया।"

सुखलता ने आश्चर्य चकित हो पूछा– "पिताजी को यह बात मालूम हो जाती तो आपका सिर कटवा देते?"

"जी हाँ, राजकुमारीजी! मैंने तुम्हारे वास्ते अपना सिर दाँव पर रखा।" इंद्रपाल ने मुस्कुराते हुए उत्तर दिया।

कटहल का स्वाद!

एक बार एक वृद्ध काबूलीवाला बंगाल आया। फलों की दूकान में एक बड़े फल को देख आश्चर्य चकित हो पूछा–"मैंने अनेक प्रकार के फल खाये हैं, मगर इतना बड़ा फल मैंने कहीं नहीं देखा है। यह कौन-सा फल है?"

"वह कटहल है। बड़ा ही स्वादिष्ट होता है। इस देश के सभी लोग उसे खाते हैं।" दूकानदार ने जवाब दिया।

काबूलीवाला उसे ख़रीद कर घर ले गया। आराम से बैठकर दांतों से फल काटकर खींचा। उसकी गंध बड़ी अच्छी थी, स्वाद तो उससे भी अद्भुत था। मगर बेचारा वह कटहल के रस के बारे में कुछ नहीं जानता था। उसकी लंबी दाढ़ी और मूँछों में रस छिपक गया, हाथों में भी रस लग गया। पानी से धोने पर भी नहीं छूटा। राख मलने पर वह भी बालों और हाथों में भी छिपक गया, पर काबूली की समझ में न आया कि बंगाली बाबू लोग ऐसे पल को कैसे खाते हैं।

आख़िर उसने एक बुज़ुर्ग के पास जाकर अपनी हालत बतायी। उस बुज़ुर्ग ने समझाया–"कटहल खाना हो तो हाथों तथा मुँह पर भी पहले थोड़ा तेल मल लेना चाहिए, वरना इसका रस छिपक जाता है, छूटता नहीं, अब आपको दाढ़ी मुंडवाये बिना कोई दूसरा चारा नहीं है।"

काबूली ने इसी प्रकार अपनी दाढ़ी मुंडवा कर कटहल के रस से पिंड छुड़ा लिया। इसके बाद वह जब भी किसी दाढ़ीवाले को देखता तो यही पूछ बैठता–"ओह, आपने भी कटहल खा लिया है न?"

भला और बुरा

एक गाँव में सुमंत नामक एक महानुभाव था। वह अपने साथ अपकार करने पर भी उसका उपकार किया करता था। वह गाँव के एक छोर पर एक कुटी बनाकर उसमें अकेले निवास करता था। चाहे जिस किसी भी वक़्त कोई मेहमान आता तो उसे वह आतिथ्य देता था।

एक दिन एक चोर लू लगने से सुमंत की कुटी के सामने गिर गया। सुमंत ने कई प्रकार से उसकी सेवा-शुश्रूषा की, तब जाकर वह होश में आया। उसने इशारा किया कि वह भूखा है। पाँच मिनट के अंदर ही सुमंत ने उसे बढ़िया खाना खिलाया। चोर ने ताबड़-तोड़ खा लिया, पर खाने के बाद उसे संदेह हुआ। उसने सुमंत से पूछा—"महाशय, इस कड़ी दुपहरी के समय आप मेरे लिए ऐसा बढ़िया भोजन इतनी जल्दी कैसे तैयार कर सके?"

"मेरे पास महिमावाला एक पात्र है। उसकी मदद से पल भर में आवश्यक भोजन पदार्थ प्राप्त कर सकते हैं।" सुमंत ने जवाब दिया।

चोर ने आश्चर्य में आकर पूछा—"क्या वह पात्र मुझे दिखा सकते हैं? एक बार उसकी महिमा देखने की मेरी इच्छा है!"

सुमंत भीतर चला गया। एक पात्र लाकर चोर के सामने ही ज़मीन पर औंधे मुंह रख दिया और कहा—"मुझे केले चाहिए।" इसके बाद पात्र के ऊपर उठाते ही उसके नीचे केले थे।

उस पात्र को देखते ही चोर के मन में लोभ पैदा हुआ। उस रात को चोर ने पात्र को चुरा लिया। उस पात्र के द्वारा चोर के मन में करोड़पति बन जाने की आशा जगी। मगर उस पात्र ने चोर के यहाँ कोई महिमा नहीं दिखायी। कम से कम

अशोक कुमार वर्मा

वह जो खाना चाहता था, वह भी प्राप्त नहीं हुआ।

दूसरे दिन चोर ने वह पात्र सुमंत को ला दिया और कहा–"महात्मा, मैं भूल से आप का पात्र अपने साथ ले गया था। मुझे क्षमा करके अपना पात्र वापस ले लीजिए।"

सुमंत बिलकुल नाराज नहीं हुआ। चोर के हाथ से पात्र लेकर उसी वक़्त पात्र के द्वारा खीर वगैरह की सृष्टि की और चोर को बढ़िया भोजन खिलाया।

चोर अपने कुतूहल को रोक नहीं पाया, बोला–"महात्मा, यह पात्र मेरे पास अपनी कोई महिमा दिखा नहीं पाया। ऐसा क्यों?"

सुमंत ने हँसकर जवाब दिया–"मेरे जीते जी यह पात्र दूसरों के लिए काम नहीं दे सकता।"

चोर को अब पात्र का रहस्य मालूम हो गया। उसने महात्मा को मारकर उस पात्र का उपयोग अपने लिए करना चाहा। इसलिए उसने खाने में ज़हर मिलाकर सुमंत को दिया और कहा–"महात्मा, आप ने दो बार मुझे बढ़िया भोज दिया, इसके बदले में मैं आप के वास्ते यह आहार लाया हूँ। आप कृपया यह आहार लेकर मुझे धन्य बनाइये।"

सुमंत ने बिना संकोच के चोर का दिया हुआ खाना उसके सामने ही खा लिया। तब चोर वहाँ से चला गया।

उस रात को बड़ी देर बाद चोर सुमंत की कुटी में आया। सुमंत चारपाई पर लेटा पड़ा था। चोर पात्र को लेने जा रहा था। मगर पैर से कोई चीज़ टकरा गयी जिस से वह नीचे गिर गया।

आहट पाकर सुमंत ने आँखें खोलीं। चारपाई पर बैठकर पूछा—"कौन है वह?"

चोर ने आश्चर्य में आकर पूछा—"महात्मा, क्या आप अब भी जीवित हैं?"

"क्यों? तुमने यह क्यों सोचा कि मैं जीवित नहीं रहूँगा?" सुमंत ने पूछा।

"आज मैंने आप को जो खाना दिया, उसमें बड़ा ही असरदार ज़हर मिला दिया था। मैंने सोचा कि ज़हर ने अब तक आप के प्राण ले लिया होगा।" चोर ने जवाब दिया।

"मैं योगाभ्यास करता हूँ, प्राणघातक भयंकर विष को भी मैं हज़म कर सकता हूँ?" निश्चल भाव से सुमंत ने कहा।

"आप को ज़हर देकर मार करके मैं आप के पात्र को ले जाना चाहता था, इसके बाद आराम से जीना चाहता था, मगर मेरी इच्छा की पूर्ति नहीं हुई।" चोर ने निराश होकर कहा।

"इसके लिए मैं क्या कर सकता हूँ? तुम्हारी क़िस्मत अच्छी नहीं है! क्या खाना खाकर जाओगे?" सुमंत ने चोर से पूछा।

चोर शर्मिन्दा हुआ। साथ ही उसके मन में एक संदेह भी पैदा हुआ। उसने पूछा—"महात्मा, मैं आप के साथ द्रोह करना चाहता था, फिर भी आपने मुझसे नफ़रत नहीं की? उल्टे मेरे साथ अच्छा व्यवहार कर रहे हैं? यह अनुभव मेरे लिए बड़ा ही विचित्र मालूम होता है।"

"इसमें विचित्र की बात क्या है? अच्छाई करना मेरी आदत की बात है। बुराई करना तुम्हारी आदत है। जब तुम अपनी आदत को छोड़ने में लाचार हो, तब मैं अपनी आदत को कैसे छोड़ सकता हूँ?" सुमंत ने शांतपूर्ण शब्दों में उत्तर दिया।

भूख का स्वाद

एक बार एक राजा जंगल में शिकार खेलते-खेलते रास्ता भटक गया। राजा के साथ रसोइया भी था। दुपहर हो गयी। दोनों भूख से परेशान थे। दोनों जंगल के समीप के एक छोटे से गाँव में पहुँचे। एक झोंपड़ी के पास आकर दर्वाज़ा खटखटाया। उस झोंपड़ी में अकेली रहनेवाली बूढ़ी ने दर्वाज़ा खोला। अतिथियों को भूखा देख झट बूढ़ी ने खाना बनाया और घास की चटनी बनाकर खिलायी। राजा ने बड़े चाव से खाना खाया, उस खाने की तारीफ़ करके बूढ़ी को अपने गले का रत्नहार निकालकर पुरस्कार में दे दिया।

मिष्टान्न खाकर भी कभी प्रसन्न न होनेवाले राजा को घास की चटनी की तारीफ़ करते देख रसोइया अचरज में आ गया। इसके बाद वे दोनों क़िले में लौट आये। कुछ दिन बाद रसोइया ने यह सोचकर घास की चटनी बनाई कि राजा को यह चटनी ज़्यादा पसंद है। राजा ने उस चटनी को चखते ही क्रोध में आकर रसोइया को डांटा और उसको नौकरी से हटा दिया।
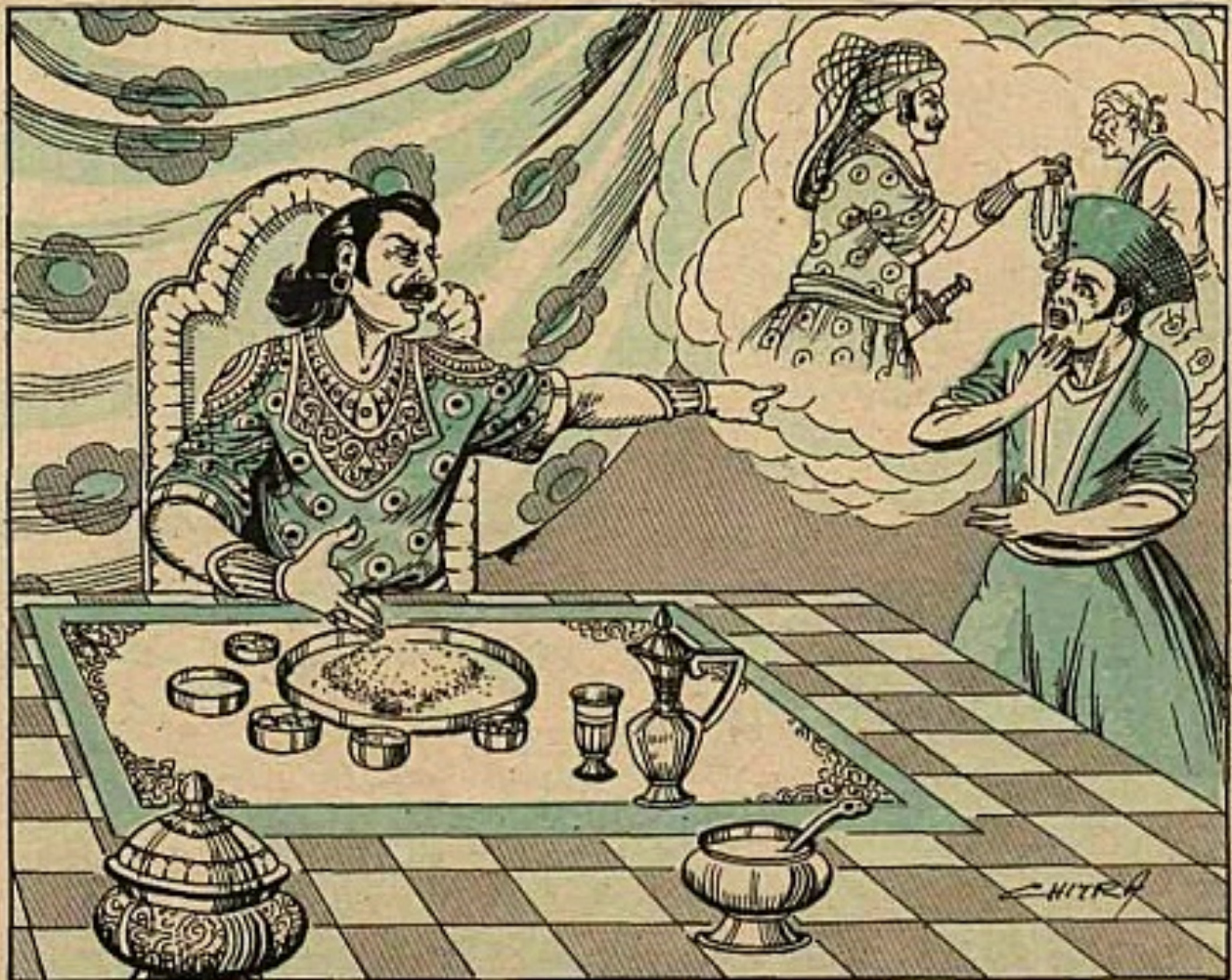
वर की परीक्षा

बात बहुत पुरानी है। उन दिनों में विशाल नगर पर राजा देवदत्त शासन करता था। चन्द्रमती राजा के इकलौती बेटी थी। मगर लोगों में यह अफवाह फैल गयी थी कि राजकुमारी अत्यंत रूपवती है और उसके हाथ के स्पर्श से भयंकर बीमारियाँ भी स्वस्थ हो जाती हैं।

चंद्रमती जब विवाह के योग्य हो गयी, तब राजा ने उसके विवाह की जर्चा की।

चंद्रमती ने अपने पिता से कहा—"मेरे पति बनने योग्य कुछ व्यक्तियों का आप निर्णय कीजिए, उनमें से मैं अपने पति का चुनाव करूँगी।"

राजा देवदत्त ने आस-पास के सभी देशों के राजकुमारों के संबंध में दरियाफ़्त करके चार राजकुमारों को स्वयंवर में उपस्थित होने लिए निमंत्रण भेजा। तब जय, अजय, विजय और विनय नामक चार राजकुमार चन्द्रमती के साथ विवाह करने के विचार से आये, देवदत्त ने उनका राजोचित सत्कार किया, चारों को सादर बिठाकर उसी ओर से गुजरने वाली परिचारिका को आदेश दिया—"चण्डी, राजकुमारी को बुला लाओ।"

चण्डी जल्दी-जल्दी चली गयी, थोड़ी ही देर में लौट आयी और बोली—"राजकुमारीजी इस वक़्त पूजा-मंदिर में हैं। कहती हैं कि पूर्णिमा तक उनकी पूजा समाप्त न होगी; तब तक वे बाहर नहीं आयेंगी।"

इस पर देवदत्त ने राजकुमारों से कहा—"चार दिन तुम लोग प्रतीक्षा करो। तुम लोगों के आराम के वास्ते मैं सभी सुविधाओं का प्रबंध करवा दूँगा। जब जो चीज़ चाहे तब तुम लोग चण्डी से बतला दो तो वह सारा इंतज़ाम करेगी।"

दीनानाथ गुप्त

राजकुमारों ने मान लिया। उनके ठहरने का प्रबंध राजमहल में ही अलग-अलग किया गया। चण्डी एक के बाद एक के पास जाकर उनके कुशल-क्षेम का परामर्श करती रही।

जय नामक राजकुमार इस विचार को लेकर चन्द्रमती के साथ विवाह करने आया था कि वह अत्यंत रूपवती है। वह चन्द्रमती के रूप-सौंदर्य को देखने को लालायित था। इसके वास्ते चार दिनों तक प्रतीक्षा करना उसके लिए चार युगों जैसा लग रहा था।

पहले दिन शाम को चण्डी जय के कमरे में सुगंधित पुष्प सजाने आयी। तब जय ने उसको निकट बुलाकर पूछा—"चण्डी, मैं राजकुमारी को तुरंत देखना चाहता हूँ। क्या दिखा सकती हो?"

चण्डी ने थोड़ा डरने का सा अभिनय किया और कहा—"आप यदि अभी देखना चाहते हैं तो मेरे साथ चलिए। मैं आपको राजकुमारी को दिखाऊँगी। मगर यह बात किसीसे न कहिये।" यों कहकर धुंधले प्रकाशवाले दालान से होकर अंत:पुर की ओर चल पड़ी। जय ने उसका अनुसरण किया।

चण्डी पूजा मंदिर के पास आयी। दर्वाजे पर लटकनेवाले रेशमी पर्दे को

थोड़ा हटाकर भीतर झाँककर देखा और जय को इशारा किया कि वह भी देख ले। भीतर देखकर जय घबरा गया। पार्वती देवी की मूर्ति के सामने बैठकर पूजा करने वाली युवती काली और मोटी थी। उसके बड़े बड़े दाँत निकल आये थे। देखने में वह बहुत ही विकृत लगती थी।

"छी छी, क्या इस पिशाचिनी के वास्ते मैं यों लालायित था?" यह सोचकर वह जाने को हुआ; चण्डी के समझाने पर भी सुने बिना उसी रात को जय अपने देश को चला गया।

दूसरे दिन चण्डी अजय के कमरे में विस्तर झाड़कर लगा रही रही थी, तब

अजय ने उससे पूछा–"जय मुझ से बताये बिना ही चला गया है; कारण क्या हो सकता है?"

चण्डी ने अजय के निकट जाकर गुप्तरूप से कहा–"जय ने राजकुमारी को देखने की इच्छा प्रकट की। मैंने मूर्खतावश उसे राजकुमारी को दिखाया। उसे राजकुमारी का सौंदर्य प... नहीं आया, इसलिए रूटकर चला गया है।"

अजय थोड़ी देर सोचता रहा, तब बोला–"पत्नी के लिए सौंदर्य की आवश्यकता जरूर है, मगर उस पत्नी के साथ जब राज्य भी मिलनेवाला है, तब सौंदर्य को अधिक प्रधानता नहीं देनी चाहिए थी। जय को भागना नहीं चाहिए था।"

वह राज्य के लोभ में पड़कर चन्द्रमती के साथ विवाह करने को आया था। चण्डी इस पर अचरज में आकर बोली–"क्या आप यह सोचते हैं कि राजकुमारी के साथ विवाह करने पर विशाल देश का राज्य भी मिलेगा? राजा ने अपने भतीजे को दत्तपुत्र बनाने का कभी निश्चय कर लिया है?"

यह बात सुनते ही अजय निराश हो गया और यह कहते उसी वक़्त वह अपने देश के लिए रवाना हुआ–"तो अब मेरा यहाँ रहने का मतलब ही क्या है? मैं अभी चला जाता हूँ।"

दूसरे दिन चण्डी उद्यान में फूल चुन रही थी। तब विजय ने उसके निकट जाकर पूछा–"तुम कल दिन भर दिखायी नहीं दी। कहाँ गयी थी?"

चण्डी ने विजय को जय और अजय का समाचार सुनाया।

यह समाचार सुनते ही विजय ने हँसकर कहा–"वह तो पागल था। उसका राज्य ही बहुत बड़ा है, क्या वह उसके लिए पर्याप्त नहीं था? राजकुमारी कुरूपी हो और उसके साथ भले ही राज्य प्राप्त न हो, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मैंन

सुना है कि उसके हाथ के स्पर्श के साथ भयंकर बीमारियाँ भी दूर हो जाती हैं। मेरे माता-पिता चिरकाल से अस्वस्थ हैं। मैं चाहता हूँ कि राजकुमारी के साथ विवाह करके अपने राज्य में ले जाऊँ और अपने माता-पिता को स्वस्थ बना लूँ? इसी आशा से मैं यहाँ पर इतने दिनों से प्रतीक्षा कर रहा हूँ?"

चण्डी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए उत्तर दिया–"कहीं किसी मनुष्य के हाथ का स्पर्श होने मात्र से भयंकर बीमारियाँ दूर हो जाती हैं? आप से किसने यह झूठी बात कही? और आपने भी इसे कैसे विश्वास किया?"

विजय ने निराश होकर पूछा–"बस, यह बात है? यह बात तुमने पहले ही क्यों नहीं बतायी? मैं कभी का चला जाता।" यों कहकर विजय उसी दिन अपने देश की ओर चला पड़ा।

उस दिन रात को चण्डी विनय के कमरे में गयी। विनय किसी पीड़ा से परेशान मालूम हो रहा था।

"आप को क्या हो गया है? यह कैसी पीड़ा है?" चण्डी ने पूछा।

"चण्डी, अब मैं ज्यादा देर जीवित नहीं रह सकता? अचानक मेरे हृदय में पीड़ा शुरू हो गयी है।" यों कहते विनय बिस्तर पर छटपटाने लगा।

चण्डी तुरंत वैद्य को बुला लायी। विनय के सो जाने के लिए दवा दिलायी। विनय की छटपटाहट जब बंद हुई और

उसकी आँख लग गयी, तब चण्डी ने विनय की छाती पर औषध मलना शुरू किया।

दूसरे दिन विनय जब नींद से जाग उठा, तब उसे किसी प्रकार की पीड़ा न थी। उसके सिरहाने बैठे पंखा झलते चण्डी दिखायी दी।

विनय ने विस्मय के साथ पूछा–"चण्डी, क्या तुम रात भर यहीं जागते रह गयी? मैं तुम्हारी इस भलाई को कभी भूल नहीं सकता। तुमने अनोखा इलाज कराया। मुझे हृदय की बीमारी जैसे अचानक हो गयी, वैसे ही वह जाती भी रही। मैंने सोचा कि मिनटों में मर जाऊँगा, पर अब देखो, कैसा स्वस्थ हूँ। सुनो, चण्डी! मैंने राजकुमारी के साथ विवाह करने का अपना विचार बदल डाला है। मैं ऐसी पत्नी चाहता हूँ जो मेरे साथ हर चीज़ में अपना हिस्सा ले। तुम जैसे बढ़कर योग्य पत्नी मुझे और कहाँ मिल सकती है? तुम मेरे साथ मेरे देश को चली आओ, मैं तुम से विवाह करूँगा।"

यह बात सुनकर चण्डी परम प्रसन्न हुई और बोली–"मैं आप से ज़रूर विवाह करूँगी। मैं भी एक योग्य पति की खोज कर रही थी। हाँ, सुनिये, मेरा नाम चण्डी नहीं, चन्द्रमती है।"

विनय ने आश्चर्य में आकर पूछा– "क्या तुम राजकुमारी चन्द्रमती हो?"

"जी हाँ, मैंने आप चारों की परीक्षा ली। बाक़ी तीनों मुझे नहीं चाहते थे, एक मेरा सौंदर्य चाहते थे, एक मेरा राज्य और एक मेरी विद्या, केवल आपने ही मुझे चाहा। इसलिए मैं भी आप को चाहती हूँ।" चन्द्रमती ने अपना उद्देश्य स्पष्ट किया।

विनय ने समझ लिया कि राजकुमारी के हाथ के स्पर्श से ही उसकी बीमारी दूर हो गयी। तब वह राजकुमारी के प्रति कृतज्ञता से भर उठा।

शीघ्र ही एक अच्छा मुहूर्त देख देवदत्त ने अपनी पुत्री का विवाह विनय के साथ वैभवपूर्वक किया।

महाभारत

पांडवों के बारे में धृतराष्ट्र ने जो बातें कहीं, उन्हें सुनकर संजय ने यों समझाया–"राजन, पांडवों के पास मंत्र-तंत्र कोई नहीं हैं, वे युद्ध में अपनी शक्ति का परिचय दे रहे हैं। उनका सद्व्यवहार ही उन्हें विजयी बना रहा है। तुम्हारे पुत्रों ने जो दुष्कृत्य किये हैं, वे ही विषवृक्ष बनकर उनका नाश कर रहे हैं। तुम्हें कितने ही लोगों ने हित की बातें नहीं बतायीं। क्या तुमने उनकी बातें सुनीं? विदुर, भीष्म, द्रोण और मैंने भी तुम्हें खूब समझाया, पर हमारी बातें तुम्हें रुचिकर नहीं लगीं। जैसे तुमने मुझसे पूछा, इसी प्रकार दुर्योधन ने भीष्म से भी पूछा है।"

इसके बाद संजय ने वे बातें बतायीं जो दुर्योधन ने भीष्म से पूछी थीं–"दादाजी, तुम, द्रोण, कृपाचार्य तथा अन्य महारथी भी अपनी जान लड़ाकर मेरे वास्ते लड़ रहे हैं; फिर भी आप सब पांडवों के सामने ठहर नहीं पा रहे हैं। इसका कारण क्या है?"

इस पर भीष्म ने समझाया–"बेटा, तुम्हें मैंने कई बार समझाया, फिर कह रहा हूँ, सुनो–तुम पांडवों के साथ संधि कर लो और तुम तथा तुम्हारे भाई सुख से रहो। जब तक कृष्ण पांडवों के सहायक बने रहेंगे, तब तक उन्हें कोई मार नहीं सकता।"

इसके बाद उसे विश्वोपाख्यान सुनाया:

५६. भीम का हमला

एक बार ब्रह्मदेव गंधमादन पर्वत पर बैठा हुआ था, तभी देवता और ऋषि जाकर उनके चारों ओर जमा हो गये। उस वक़्त आसमान में एक प्रकाशमान विमान उन्हें दिखायी दिया। ब्रह्मा ने उसे देख हाथ जोड़कर ध्यान किया। इसे देख देवता और ऋषि उठ खड़े हुए और सबने प्रणाम किया।

ब्रह्मा ने उस विमान की स्तुति करके पूछा-"हे देव देव, आप अपने अंश को भेजकर यदुवंश में जन्मधारण कराइये जिससे जगत का कल्याण हो!"

"तुम्हारी इच्छा को जान लिया। ऐसा ही करूँगा।" यह उत्तर सुनायी दिया हौर साथ ही विमान अंतर्धान हो गया।

तब देवता और ऋषियों ने ब्रह्मा से पूछा-"पितामह, आपने अभी किसकी प्रार्थना की और क्यों?"

इस पर ब्रह्मा ने उत्तर दिया-"वे महा विष्णु हैं। प्राचीन काल में जो दैत्य, दानव और राक्षस मर गये थे, वे फिर पृथ्वी पर पैदा हुए हैं। उनका वध करने के लिए नर के साथ नारायण को भी जन्मधारण करना है। उनके साथ देवता भी पैदा होंगे। उन्हें कोई जीत नहीं सकता, पर यह बात मूर्ख लोग नहीं जानते।"

भीष्म ने यह कहानी सुनाकर दुर्योधन से कहा-"तुम भी एक क्रूर राक्षस होगे, इसलिए तुमने कृष्ण और अर्जुन के साथ वैर मोल लिया है।" इसके बाद उस दिन सब लोग अपने अपने शिविरों में जाकर सो गये।

युद्ध के पांचवें दिन का प्रातःकाल हो गया। उभयदलों की सेनाएँ व्यूह रचकर युद्ध के लिए तैयार हो गयीं। कौरवों ने मकर व्यूह की रचना की तो पांडवों ने श्वेन व्यूह की। पांडवों के व्यूह के सामने भीम, शिखंडी तथा धृष्टद्युम्न खड़े हो गये। उनके पीछे सात्यकी तथा अर्जुन थे।

युद्ध क्षेत्र में दुर्योधन ने द्रोण से कहा–"आचार्य, आप आज पांडवों का वध कीजिए।" यह बात सुनते ही द्रोण ने जोश में आकर सात्यकी का सामना किया। सात्यकी की सहायता के लिए भीम आया तो द्रोण की मदद के लिए भीष्म, और शल्य ने आकर युद्ध किया। भीष्म और द्रोण के द्वारा भयंकर युद्ध करते देख उनका सामना करने के लिए अभिमन्यु, उप पांडव तथा शिखण्डी आ पहुँचे। भीष्म ने शिखण्डी के साथ युद्ध नहीं किया। द्रोण ने भयंकर रूप में शिखंडी का सामना किया, तब वह ठहर न सका और युद्ध क्षेत्र से दूर हट गया। तब पांडवों के पीछे अर्जुन ने आकर भीष्म का सामना किया। दोनों ने घोर युद्ध किया। उसी समय उभय पक्षों के वीरों ने दिल लगाकर युद्ध किया। उस युद्ध में दोनों दलों के असंख्य सैनिक मारे गये।

पांचवें दिन जो महा भारत युद्ध हुआ, उसकी प्रमुख घटनाएँ हैं: अश्वत्थामा तथा अर्जुन के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें अर्जुन ने अश्वत्थामा के कवच को अपने बाणों से छेद दिया, परंतु इसकी परवाह किये बिना ही उसने साहस पूर्वक युद्ध किया। मगर अर्जुन ने यह सोचकर अश्वत्थामा को छोड़ दिया कि वह उसका गुरु पुत्र है। तब अन्य शत्रुओं की खोज में चला गया। आज दुर्योधन तथा भीम के बीच दारुण युद्ध हुआ। अभिमन्यु तथा लक्ष्मण कुमार के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें कृपाचार्य ने लक्ष्मण कुमार की रक्षा की और उसे दूसरी ओर ले गया।

उस दिन सात्यकी के द्वारा कौरव सेनाओं का वध करते देख दुर्योधन ने उस पर अनेक रथ भेजे। सात्यकी ने अपने अस्त्रों के द्वारा उन रथियों को तंग किया और उन सेनाओं के सेनापति भूरिश्रव पर टूट पड़ा। भूरिश्रव बड़ा योद्धा था। उसके साहस को देख सात्यकी की मदद करनेवाले सभी योद्धा तितर-

बितर हो गये। तब सात्यकी के पुत्रों ने आकर भूरिश्रव को घेर लिया और भूरिश्रव के हाथों में बुरी तरह से घायल हो गये। अपने पुत्रों को गिरते देख सात्यकी क्रोध में आया और उसने भूरिश्रव के साथ द्वन्द्व युद्ध किया। दोनों के रथ ध्वस्त हो गये। तब वे तलवार लेकर जमीन पर खड़े हो गये। दोनों के बीच भयंकर खड्ग युद्ध होने लगा। उस वक़्त भीम ने आकर सात्यकी को अपने रथ पर ले लिया। इसी तरह भूरिश्रव को दुर्योधन अपने रथ में ले गया।
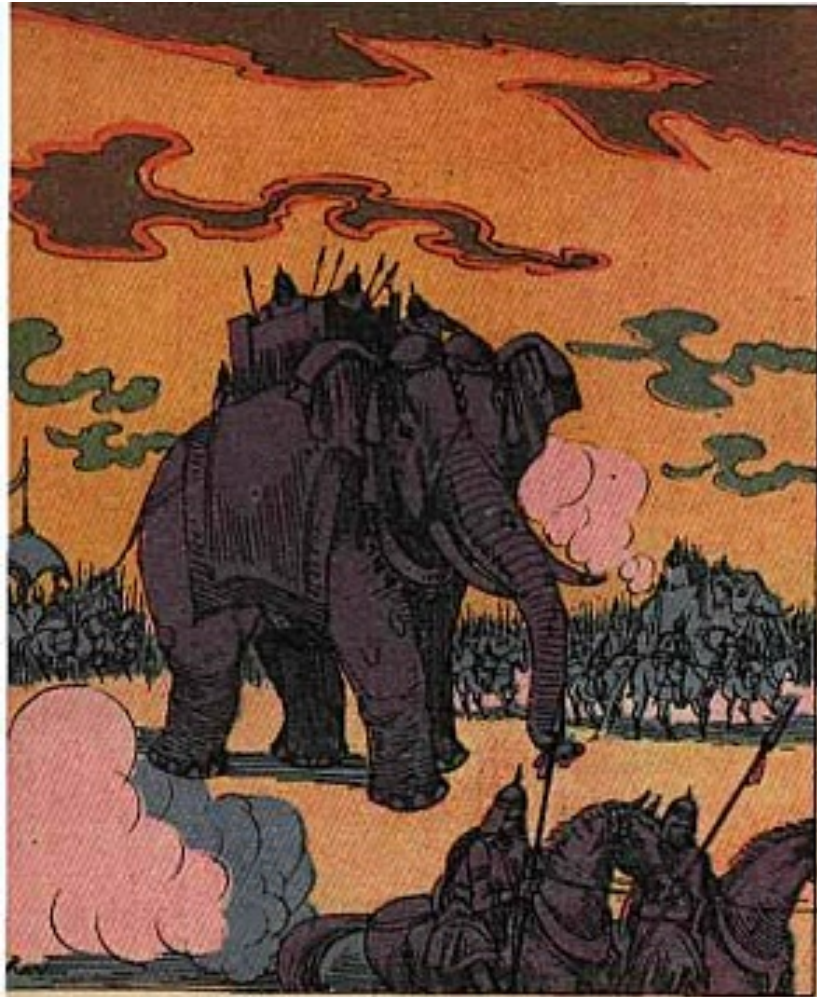
सूर्यास्त तक दोनों दलों की सेनाएँ थक गयीं, और अगे युद्ध न कर सकने के कारण अपने अपने शिविरों को लौट गयीं।

छठे दिन सवेरा होते ही फिर युद्ध शुरू हो गया। इस बार पांडव सेनाओं ने मकर व्यूह तथा कौरव सेनाओं ने क्रौंच व्यूह धारण किये। मगर इन व्यूहों के टूटने में ज़्यादा देर न लगी। प्रारंभ में ही भीम तथा द्रोण के बीच लड़ाई छिड़ गयी। द्रोण ने भीम को अपने बाणों से खूब सताया। भीम ने क्रोध में आकर द्रोण के सारथी को मार डाला। द्रोण खुद अपने रथ को चलाते पांडवों की सेनाओं को तितर-बितर करने लगा। तब भीष्म ने द्रोण की सहायता की। इसी प्रकार भीम और अर्जुन ने कौरव सेना के व्यूह को तितर-बितर कर दिया। धीरे-धीरे युद्ध चारों ओर फैल गया।

भीम ने भीष्म की परवाह किये बिना धृतराष्ट्र के पुत्रों का बध करने का निश्चय करके कौरव सेना के बीच प्रवेश किया। उन लोगों ने भीम को प्राणों के साथ पकड़ने का प्रयत्न किया। इसे भांपकर भीम गदा लेकर रथ से उतर पड़ा और कौरव-सेना का निर्मूल करने लगा।

द्रोण के साथ युद्ध करनेवाले धृष्टद्युम्न ने दूर पर भीम के रथ को देखा, तब द्रोण को छोड़ भीम के रथ के पास लौट आया,

रथ को खाली देख सारथी से पूछा– "भीम कहाँ?"

इस पर सारथी विशोक ने कहा– "राजन, मुझे दो घड़ी यहीं पर ठहरने का आदेश दे भीम कौरव-सेना में घुस गये हैं।" धृष्टद्युम्न ने सोचा कि भीम खतरे में पड़ सकता है। तब वह भी उसी मार्ग पर चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर रास्ते में पड़नेवाले हाथियों तथा सैनिकों का वध करते धृष्टद्युम्न को भीम दिखाई दिया। इतने में कौरव योद्धाओं ने भीम को घेर लिया और उस पर बाणों की वर्षा की। धृष्टद्युम्न ने वहाँ पर पहुँचकर देखा कि भीम के शरीर से खून की धाराएँ बह रही हैं, फिर भी वह मृत्युदेवता जैसे लग रहा है। तब धृष्टद्युम्न ने भीम को अपने रथ पर बिठाया और उसके शरीर में धंसे बाणों को निकाल कर उसके साथ आलिंगन किया।

इस बीच धृतराष्ट्र के पुत्र भीम तथा धृष्टद्युम्न का वध एक साथ करने के ख्याल से उन पर टूट पड़े। उनके बाणों की वर्षा में डूबकर भी धृष्टद्युम्न विचलित न हुआ और उन सबको सम्मोहन अस्त्र के द्वारा बेहोश कर दिया। इतने में द्रोण वहाँ आया, उसने प्रज्ञास्त्र का प्रयोग करके बेहोश हुए लोगों को जगाया।

इतने में भीम और धृष्टद्युम्न को न पाकर युधिष्ठिर घबरा गया और उसने अभिमन्यु इत्यादि बारह योद्धाओं को

भेजा। उन्हें देखते ही भीम और धृष्टद्युम्न अत्यंत उत्साह के साथ युद्ध करने लगे। तभी धृष्टद्युम्न ने देखा कि उसका पिता द्रुपद द्रोण के वारों से परेशान हो भागता जा रहा है। उसने द्रोण का सामना किया और अपने रथ तथा सारथी को खोकर तेज़ी के साथ अभिमन्यु के रथ पर सवार हो गया। द्रोण पांडवों की सेना को परेशान करते देखकर भी भीम तथा धृष्टद्युम्न कुछ न कर पाये। द्रोण के अद्भुत पराक्रम को देख दोनों दल की सेनाओं ने उसकी प्रशंसा की।

दुर्योधन आदि के मन में फिर से भीम को बंदी बनाने का विचार आया। मगर युधिष्ठिर के द्वारा भेजे गये अभिमन्यु इत्यादि योद्धाओं ने उन्हें भगा दिया। मगर भीम को इस बात का बड़ा दुख हुआ कि दुर्योधन आदि उसके हाथों में आकर भी खिसक गये हैं।

युद्ध क्षेत्र के दक्षिणी भाग में अकेले अर्जुन ने शत्रु की अपार सेना का संहार किया।

सूर्य को तेज़ी के साथ पश्चिमी दिशा में जाते वक़्त दुर्योधन के मन में भीम को मार डालने की प्रबल इच्छा पैदा हुई। इस विचार के आते ही दुर्योधन भीम से जूझ पड़ा। उसके हाथों में अपने छत्र तथा ध्वजा को तुड़वाकर मार खाया, तब कृपाचार्य के रथ में जाकर आराम किया। उस समय धृष्टकेतु, अभिमन्यु, उपपांडव, केकय वगैरह ने धृतराष्ट्र के पुत्रों के साथ युद्ध चालू रखा। उस भयंकर युद्ध में दुष्कर्ण नामक व्यक्ति मर गया।

थोड़ी देर बाद सूर्यास्त हो गया। दोनों सेनाओं में शांति छा गयी। युद्ध रोककर दुर्योधन अपने शिविर को लौट गया। युधिष्ठिर ने ख़ुशी में आकर भीम तथा धृष्टद्युम्न के साथ आलिंगन किया और तब वे भी प्रसन्नता पूर्वक अपने अपने शिविरों में लौट आये।

थोड़ी देर विश्राम करने के बाद दुर्योधन ने भीष्म से कहा—"दादाजी, हमने कई

अभेद्य व्यूह रचे, फिर भी पांडवों ने उन्हें तोड़ डाले। आज भीम ने हमारे मकर व्यूह में घुसकर मुझे खूब सताया है। उसकी भयंकर आकृति को देख मैं सचमुच बेहोश हो गया हूँ। मेरा मन घबरा रहा है। मेरी आशा है कि आपका अनुग्रह प्राप्त कर पांडवों का वध करूँ और विजय प्राप्त करूँ!"

इस पर भीष्म ने समझाया–"बेटा, तुम्हें विजय दिलाने के ख्याल से मैं अपनी शक्ति भर प्रयत्न कर रहा हूँ। मैं किसी भी प्रकार से अपनी आत्मा को धोखा नहीं दे रहा हूँ। पांडवों के पक्ष में लड़नेवाले लोग महान शूर, महारथी, शस्त्रवेत्ता हैं, साथ ही वे सब जी तोड़ लड़ रहे हैं, ऐसे महान वीरों को पराजित करना नामुमकिन है। मैं सच कहता हूँ कि अपने प्राणों की परवाह किये बिना तुम्हारे वास्ते लड़ रहा हूँ, तुम्हारे वास्ते ज़रूरत पड़ने पर मैं तीनों लोकों को भस्म करने के लिए तैतार हूँ।"

ये बातें सुन दुर्योधन बड़ा प्रसन्न हुआ।

भीष्म ने थोड़ी देर तक सोचकर दुर्योधन से फिर यों कहा–"तुम्हारे वास्ते लड़ने में उत्साह दिखानेवालों में मेरे अतिरिक्त द्रोण, शल्य, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, सोमदत्त, सैंधव, विंदानुविंद, बाह्लिक, बृहद्बल, चित्रसेन, विविंशती इत्यादि महावीर, हजारों रथ-योद्धा, गजसेना व अश्वदल भी सन्नद्ध हैं। ये सब देवताओं को भी पराजित करनेवाले हैं, लेकिन मैं तुम्हारे हित के वास्ते एक बात बता रहा हूँ। सच बात तो यह है कि इंद्र के साथ सभी देवता भी मिलकर आ जावे तब भी पांडवों को हरा नहीं सकते। इसलिए यह कहना संभव नहीं है कि पांडव ही मुझे जीत सकेंगे या मैं पांडवों को जीत सकता हूँ।"

ये बातें सुनाने के बाद दुर्योधन के शरीर में हुए घावों को भरने के लिए भीष्म ने उसे विशल्यकरणी नामक दवा दे दी।

मित्र-भेद

[५]

दमनक के द्वारा दंतिल की कहानी सुनकर संजीवक बोला–"तुम्हारा कहना ठीक है, इसलिए तुम जैसा चाहते हो, करो।"

इसके बाद दमनक संजीवक को पिंगलक के पास ले गया और बोला–"महाराज, यही संजीवक है! अब आपकी जैसी इच्छा?"

संजीवक पिंगलक को प्रणाम करके बड़ी नम्रता के साथ सामने बैठ गया।

पिंगलक ने अपने तेज व भयंकर नखोंवाला पंजा फैलाकर कहा–"तुम्हारा स्वागत है! बताओ, तुम्हारा स्वास्थ्य कैसा है? तुम इस जंगल में क्यों आये हो?"

संजीवक ने बताया कि वह वर्द्धमान के दल के साथ कैसे आया और जंगल में वह कैसे अकेले ही रह गया। इसके बाद क्या क्या हुआ, सारी बातें बतायीं।

इस पर पिंगलक ने अभय प्रदान करते कहा–"दोस्त, तुम्हें किसी प्रकार के भय की जरूरत नहीं। तुम अपनी इच्छा के अनुसार इस जंगल में स्वेच्छापूर्वक जिओ। मगर सदा तुम मेरी दृष्टि में पड़ने लायक़ ही रहो। क्योंकि जब मैं तुम्हारा ख्याल न रख सकूँगा, तब ऐसे अनेक खूँख्वार जानवर इस जंगल में हैं जो तुम्हारी हानि कर सकेंगे!"

"जो आज्ञा!" यह कहकर संजीवक सीधे यमुनानदी में गया, भरपेट पानी पीकर पहले की भांति निर्भयता के साथ जंगल में विचरण करने लगा।

दिन बीतते गये और साथ ही पिंगलक और संजीवक के बीच मित्रता बढ़ती ही गयी। पिंगलक हर बात में संजीवक की

अंतिम पृष्ठ का चित्र

सलाह लेता, संजीवक बड़ा ही अक़्लमंद था। वह करटक, दमनक इत्यादि की गुप्त चर्चाओं का पता लगा लेता और पिंगलक को सचेत किया करता था। इसलिए पिंगलक उन जानवरों को दूर रखता और संजीवक की सलाहों को ही स्वीकार कर लेता था। दोनों सियारों को दरबार में प्रवेश न मिला था, इस कारण वे भूख से तड़पने लगे थे।

एक दिन दमनक ने करटक से कहा– "भैया! हम तो निराश्रय हो गये हैं। पिंगलक को संजीवक के साथ वार्तालाप करने में ऐसा मजा आने लगा है कि वह शिकार खेलने तक नहीं जाता। इस कारण हमें खाना तक नहीं मिल रहा है। अब हमें क्या करना है?"

"तुम जाकर पिंगलक को समझा दो। राजा भले ही न सुने, मंत्रियों को तो सचेत करना ही है। यह तुम्हारी ही बेवक़ूफ़ी थी कि तुमने घास चरनेवाले जानवर का राजा के साथ परिचय कराया। अब क्या हो सकता है?" करटक ने ताने कसे।

"तुम सच कहते हो! गलती मेरी है, राजा की नहीं। यह तो मेरा स्वयंकृत अपराध है। स्वयंकृत अपराध कभी कभी कैसे हानि करते हैं, देवशर्मा की कहानी बताती है।" दमनक ने कहा।

"क्या कहा? सो कैसे?" करटक ने पूछा। इस पर दमनक ने यों कहा:

देवशर्मा की कहानी

एक प्रदेश में जनपदों से दूर एक मठ था। देवशर्मा नामक यति उस मठ में अकेले रहते, शिवलिंग की अर्चना किया करता था। अनेक भक्त उस मठ को क़ीमती वस्त्र दान दिया करते थे। अपने सर्वस्व को त्यागने के बाद भी यति देवशर्मा के मन में सोने के प्रति लोभ था। एक दिन वह अपना वेश बदलकर क़ीमती वस्त्रों का गट्ठर बांधकर दूर के एक नगर मे ले गया। उन वस्त्रों को सोने की क़ीमत पर बेच दिया। वह सोना कपड़े

की एक थैली में बांधकर थैली को अपने कंधे में लटकाकर मठ को लौट आया। इसके बाद वह किसी पर विश्वास नहीं करता था। दिन रात उस थैली को कंधे पर लटकाये रहता था। यह बात लोगों ने अनुभवपूर्वक ही बतायी थी–"संपत्ति को साधना कठिन है, उसकी रक्षा करना भी कठिन है, उसे खोना दुख का कारण है। उसका व्यय होना भी दुख का हेतु है। उसका मूल ही दुख है। उसका परिणाम विषादपूर्ण है।"

आषाढ़भूति नामक एक दुष्ट था। वह पाप करने से डरता न था। दूसरों की संपत्ति को लूटना ही उसका लक्ष्य था। देवशर्मा के कंधे पर लटकनेवाला सोना एक दिन उसकी नजर में पड़ा। वह हमेशा यही सोचने लगा कि कैसे वह सोना हड़प ले। मठ की दीवारें पत्थरों से बनायी गयी थीं, इसलिए सेंध लगाना मुश्किल था। इसलिए आषाढ़भूति ने सोचा कि देवशर्मा का शिष्य बनकर उसे मीठी मीठी बातें सुनाकर उसका विश्वासपात्र बने।

यह सोचकर एक दिन आषाढ़भूति देवशर्मा के पास गया। "परमशिव को प्रणाम!" कहते उसके चरणों पर साष्टांग गिर पड़ा। उसने बड़ी विनय के साथ कहा–"महात्मा! भवसागर सूखी घास की

ज्वाला जैसी क्षण भंगुर है। सुख सब निर्जल मेघों के समान हैं। बंधु, पत्नी-पुत्र इत्यादि स्वप्न की भ्रांति जैसे हैं। ये सारी बातें पूर्णरूप से जान लेने के बाद मैं आपकी सेवा में मोक्ष पाने का मार्ग जानने आया हुआ हूँ।"

ये बातें सुनकर देवशर्मा ने कहा–"बेटा, इतनी छोटी अवस्था में लौकिक झंझटों को तोड़नेवाले तुम धन्य हो! यौवन में साधनेवाला आत्म निग्रह ही सच्चा निग्रह है। तुमने मुझसे मोक्ष का मार्ग पूछा। जो व्यक्ति निष्ठा के साथ 'ओं नम्मश्शिवाय' कहते शिवजी पर एक पुष्प रखेगा, उसे पुनर्जन्म का भय न होगा।"

इस पर आषाढ़भूति ने झट देवशर्मा के चरण पकड़ लिये और कहा–"महात्मा, यह मंत्र कैसे पुनश्चरण करना है, समझाकर मुझे धन्य कीजिए।"

"समझाऊँगा, बेटा! पर तुम्हें रात्रि के समय मठ में प्रवेश करना मना है। यति को सांसारिक बंधनों से दूर रहना है। इसके लिए रात्रि के समय अकेला रहना आवश्यक है। उपदेश पाने के बाद तुम बाहर की कुटी में सो जाओ।" देवशर्मा ने समझाया।

"स्वामी! आपकी आज्ञा मुझे सिर आँखों पर है!" आषाढ़भूति ने कहा।

उस रात्रि को देवशर्मा नें आषाढ़भूति को मंत्रोपदेश किया और उसे अपना शिष्य बनाया। वह रोज अपने गुरु के चरण दबाता, पूजा के लिए फूल व पत्तियाँ लाता, इस तरह गुरु को प्रसन्न रखने लगा।

दिन बीतते गये। आषाढ़भूति सोचने लगा–"क्या मेरे गुरु कभी मुझ पर पूर्ण विश्वास न करेगा? दिन दहाड़े क्या इसकी हत्या करनी है? या जहर खिलाना है?"

उन्हीं दिनों में एक घटना हुई। देवशर्मा के एक भक्त मठ में आया और दूसरे दिन अपने घर होनेवाले यज्ञोपवीत धारण के समय उपस्थित रहने का निमंत्रण दिया।

दूसरे दिन देवशर्मा आषाढ़भूति को साथ ले अपने भक्त के गाँव की ओर चल पड़ा। थोड़ी दूर जाने पर रास्ते में एक नदी पड़ी। देवशर्मा ने अपने वस्त्र उतारे, कंधे पर लटकनेवाली थैली निकालकर वस्त्रों के बीच लपेट दिया। स्नान करने के पहले कालकृत्य करने के विचार से बोला–"आषाढ़भूति! मैं अभी आता हूँ। तब तक तुम ये वस्त्र, खासकर इस थैली का ख्याल रखना। यह परमशिव की संपत्ति है।" यों कहकर देवशर्मा चला गया। देवशर्मा के आँखों से ओझल होने तक आषाढ़भूति वहीं रहा, तब सोनेवाली थैली को उठाकर भाग खड़ा हुआ, फिर उसका कहीं पता न था।
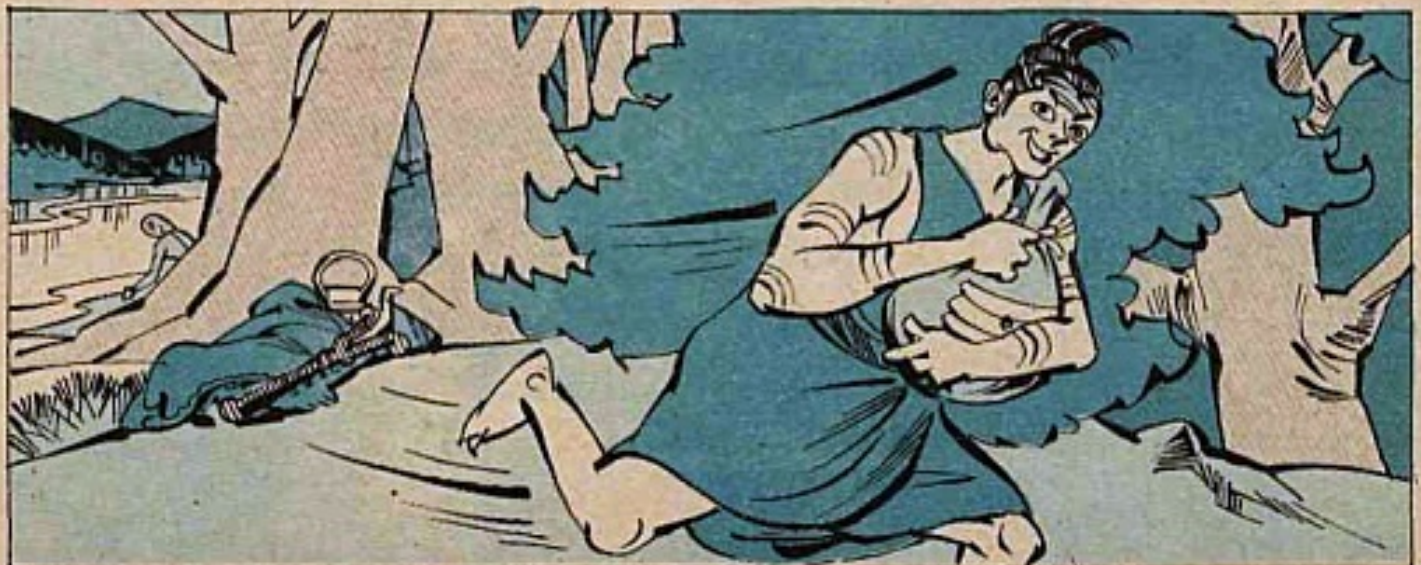
१४३. भूमध्यरेखा पर बर्फ़ीली पहाड़

अफ्रीका में भूमध्य रेखा पर रहते हुए भी कीन्या के पर्वतों की चोटियाँ बर्फ़ से ढकी होती हैं। इनमें सबसे अधिक ऊँची चोटी १७,०४० फुट की है। एक जमाने में यह एक अग्नि पर्वत था। यहाँ की चोटियों पर चढ़ना कठिन है, क्योंकि पहाड़ी घाटियाँ कंटीले पौधों से भरी होती हैं।

Photo by Dilip Banerje
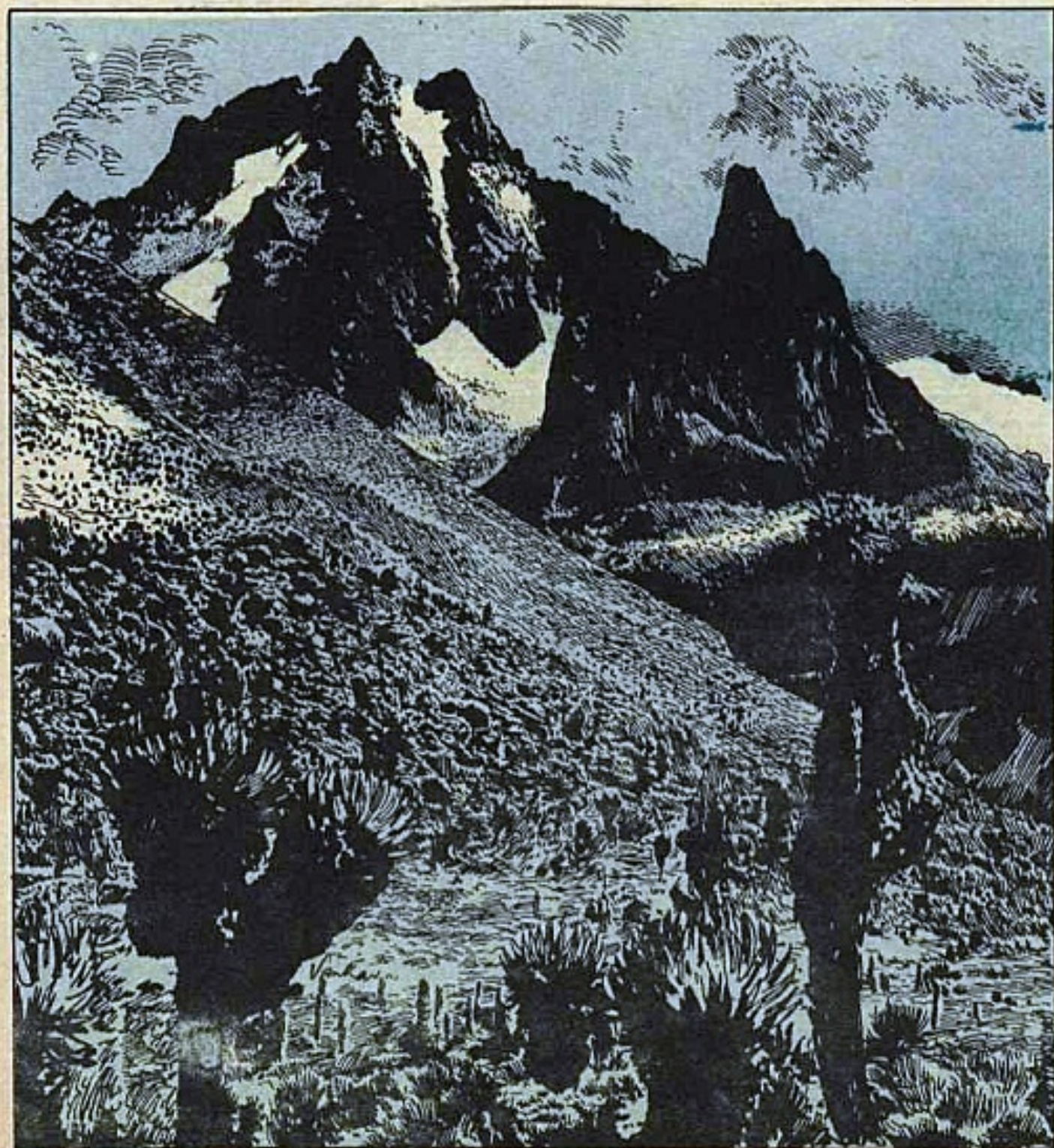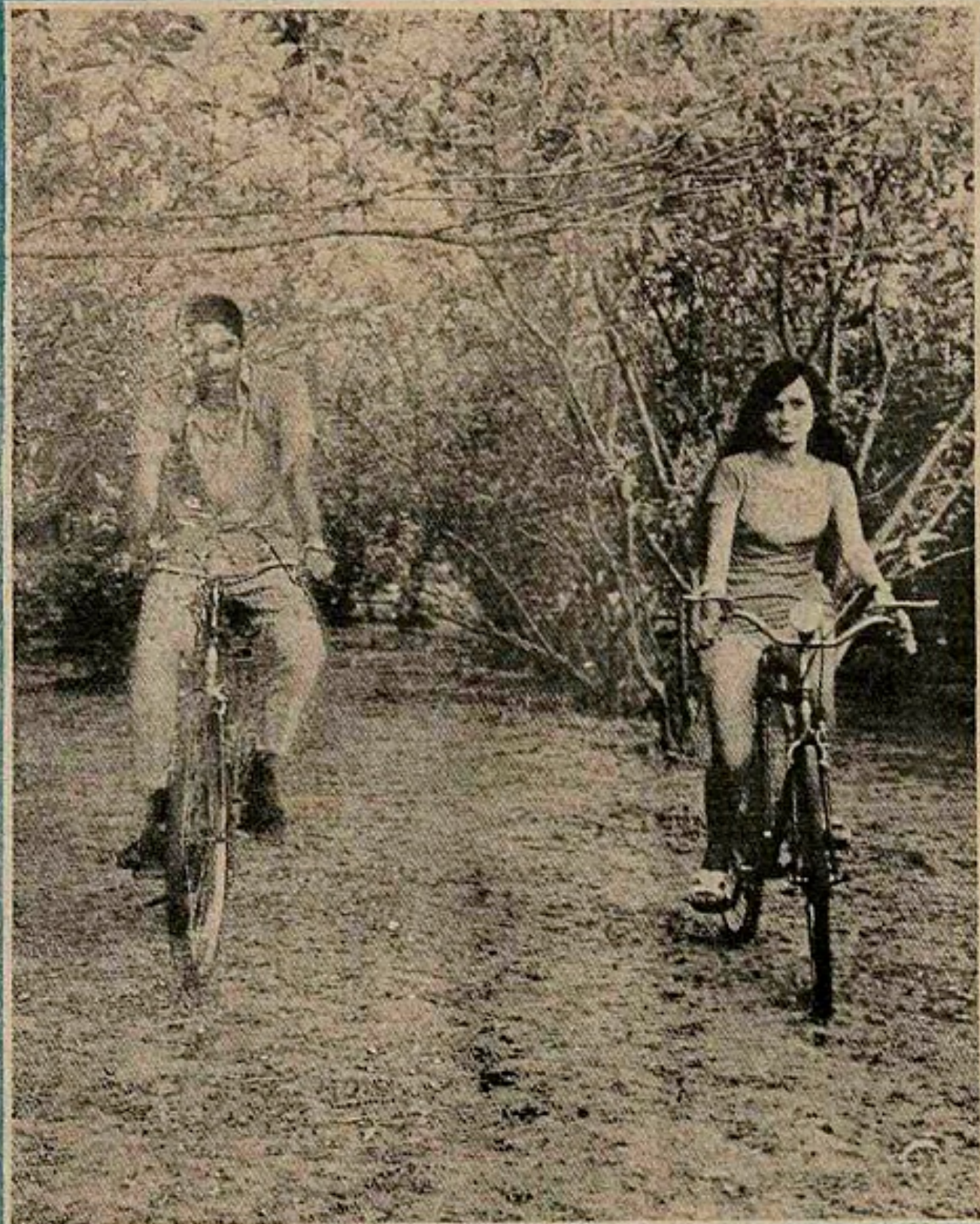
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

एक पर है एक सवार

प्रेषक :
अनिल कुमार

Photo by Sambhu Mukherjee
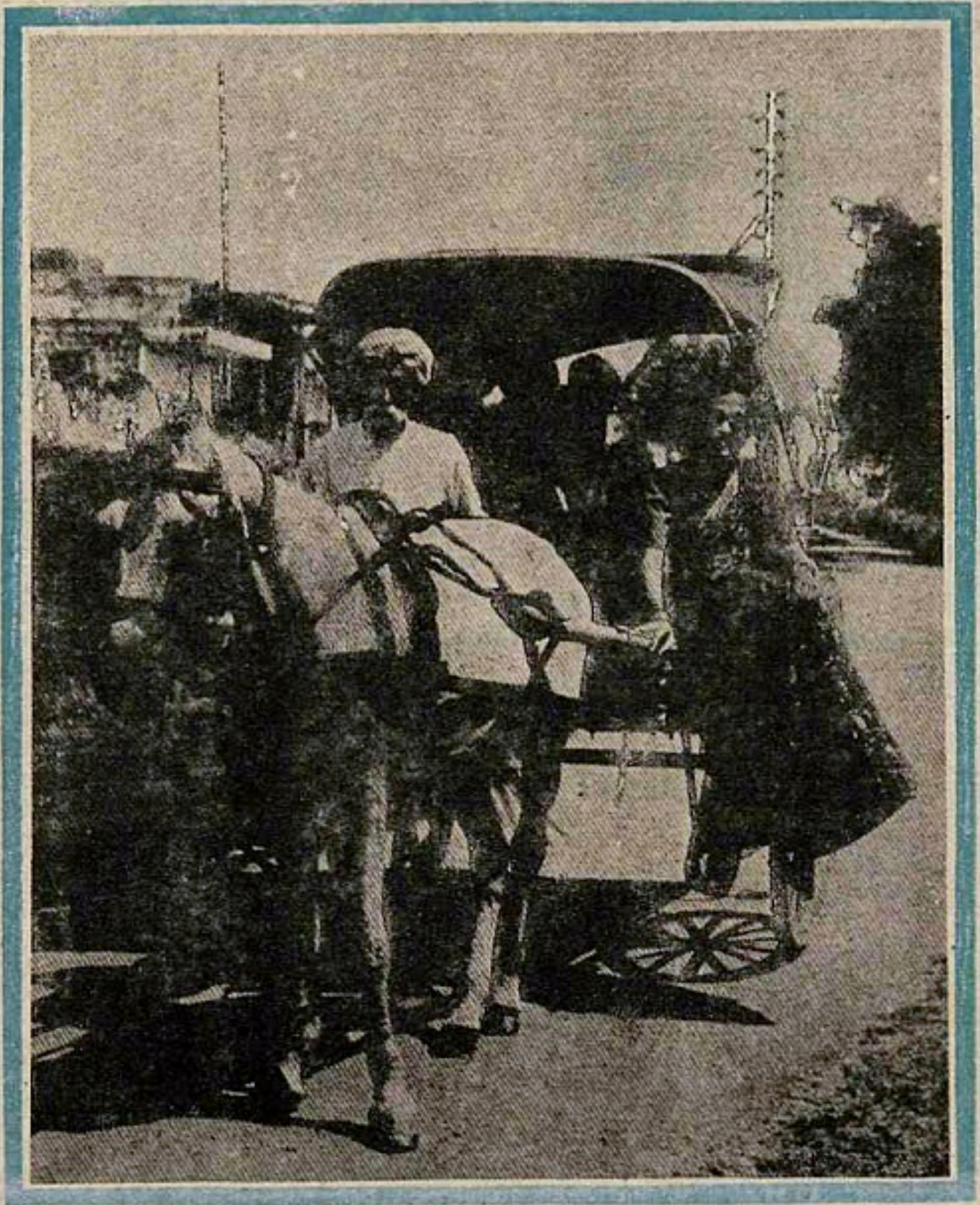
१७-बी. माधोराम क्वार्टर्स,
४, रायपुर रोड, देहरादून

इस पर बैठो सपरिवार

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ दिसम्बर ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ फरवरी के अंक में प्रकाशित की जायंगी !

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा मुखपृष्ठ:
नगर के बाहर

तीसरा मुखपृष्ठ:
नगर के बीच

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor : 'CHAKRAPANI'

Photo by: **C. K. SATYARAJ**

मित्र-भेद